लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी पत्रिका

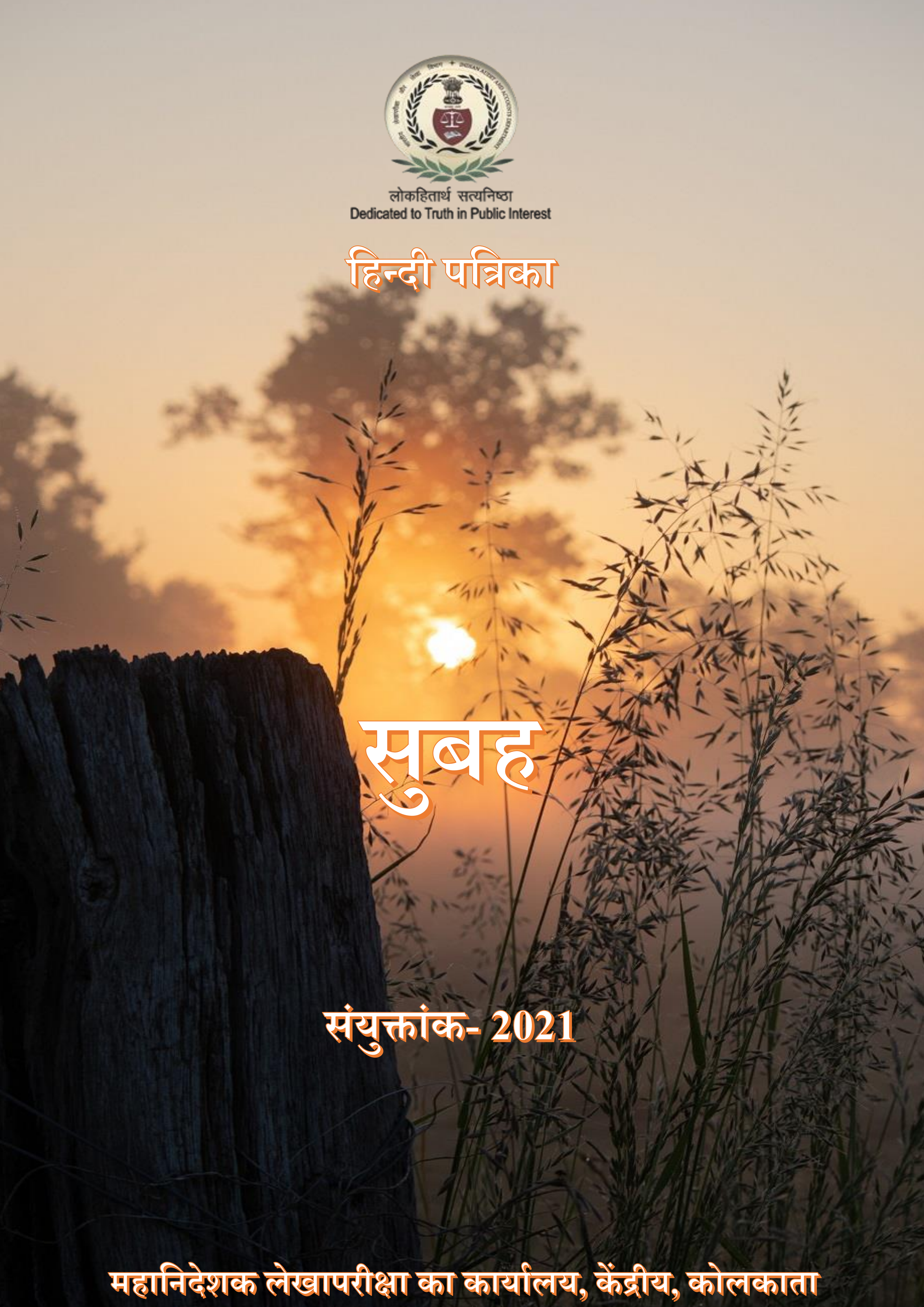

सुबह

संयुक्तांक- 2021

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, केंद्रीय, कोलकाता

पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री दीपक नारायण

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) कोलकाता

परामर्शदाता

श्री आर. श्याम

उप-निदेशक (प्रशासन)

संपादक

श्री रमेश झा

हिंदी अधिकारी

सदस्यगण

श्री रंजन कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सुश्री नीलम कुमारी साव

कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री दीपान्निता दास

कनिष्ठ अनुवादक

पत्रिका डिज़ाइनर : राहुल कुमार दुबे
वरिष्ठ लेखापरीक्षक/आई टी सेल

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

स्वत्वाधिकार

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, केन्द्रीय, कोलकाता

प्रकाशन

सुबह

प्रकाशक

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, केन्द्रीय, कोलकाता

गवर्नमेंट ऑफ इंडिया प्रेस बिल्डिंग (ईस्ट विंग), प्रथम तल

8, किरण शंकर राय रोड, कोलकाता 700 001

अंक

संयुक्तांक – 2021

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), कोलकाता

संदेश

गृह पत्रिका 'सुबह' का आगामी अंक आपको सहर्ष समर्पित है। यह अत्यंत गौरव एवं हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय से इतनी सुंदर पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है।

संविधान में यह प्रावधान किया गया है कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' एवं लिपि 'देवनागरी' होगी। अत: यह हमारा नैतिक दायित्व है कि हम इसके प्रचार-प्रसार में अपना यथोचित योगदान दें।

राजभाषा हिन्दी हमारी राष्ट्रीय एकता, धार्मिक सहिष्णुता एवं मेल-मिलाप की भाषा है। इसके विकास पर ही हमारा साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय विकास निर्भर है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में 'सुबह' पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान है। हिन्दी की प्रगति तथा इसके विकास में विभागीय पत्रिकाओं की ऐतिहासिक भूमिका है। मुझे आशा है कि इस पत्रिका से कार्यालयों में हिन्दी के प्रचलन तथा कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति उत्साह एवं रुचि उत्पन्न होगी।

मैं, सभी रचनाकारों के साथ-साथ, कुशल संपादन के लिए, पत्रिका परिवार को भी हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ।

जय हिंद, जय हिंदी।

दीपक नारायण
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), कोलकाता

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
(केंद्रीय), कोलकाता

संदेश

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में निर्बाध गति से अग्रसर कार्यालयीन पत्रिका “सुबह” के नवीन अंक के प्रकाशन पर मैं हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। पत्रिका का कुशल प्रकाशन कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की राजभाषा के प्रति कुशल निष्ठा का परिचायक है।

पत्रिका में सम्मिलित रचनाएँ रचनाकारों की लेखन प्रतिभा के साथ-साथ राजभाषा के प्रति उनके प्रेम को भी इंगित करती हैं। रचनाकारों के कुशल प्रयास के लिए मैं उनकी सराहना करता हूँ तथा कामना करता हूँ कि आप सभी के सहयोग से पत्रिका अपने अनवरत सफल प्रकाशन के माध्यम से हमारी राजभाषा को अग्रणी पंक्ति में रखने हेतु उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे।

पत्रिका के सफल एवं निरंतर प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

आर. श्याम
उपनिदेशक (प्रशासन)

संपादकीय

आपकी अपनी गृह-पत्रिका का संयुक्तांक-2021 आपको सौंपते हुए एक सुखद अनुभूति का अनुभव हो रहा है ।यह पत्रिका विविध रंग-बिरंगे मौक्तिक माला में पिरोई अद्भुत और अपने नए कलेवर व परिवेश में प्रस्तुत है। यह सब आप सभी के अतुलनीय सहयोग से ही संभव हो सका है।

भाषा समाज की पहचान होती है। किसी दल, समूह, समाज, देश को हम उसकी भाषा से भी पहचानते हैं। जो समाज जितना उन्नत होता है उसकी भाषा उतनी ही उन्नत और वृहत होती है। हिंदी भाषा भी स्वयं में काफी उन्नत एवं समृद्ध है।

राष्ट्र का भाषा से वही संबंध है जो शरीर का आत्मा से है। राष्ट्र का भाषा संबंधी स्वरूप सामान्यत: राष्ट्र अथवा राष्ट्रीयता के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान देता है। राष्ट्र एवं राष्ट्रीय एकता दोनों के लिए लोगों में जीवन हितों एवं आदर्शों की एकता का होना आवश्यक होता है। इस एकता की उत्पत्ति तब तक संभव नहीं होती जब तक एक दूसरे को समझने के लिए भाषा का एक समान माध्यम न हो। भाषा के द्वारा ही लोगो में वैचारिक तथा आत्मिक एकता की स्थापना हो जाती है एवं एक सामान्य चेतना, जिससे एक दूसरे को समझने, साथ-साथ रहने और उन्नति करने की इच्छा उत्पन्न हो जाती है ।अत: राजभाषा हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता का एक प्रमुख साधन है।

कार्यालय की ओर से मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके बहुमूल्य सुझावों एवं सहयोग से पत्रिका को मूर्त रूप दिया जा सका। पत्रिका को त्रुटिरहित बनाने की काफी कोशिश की गई है। पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका को पढ़ने के बाद अपनी प्रतिक्रियाओं से हमे अवगत कराएं ताकि प्रकाशन को और सुंदर एवं बेहतर बनाया जा सके।

रमेश झा
हिंदी अधिकारी

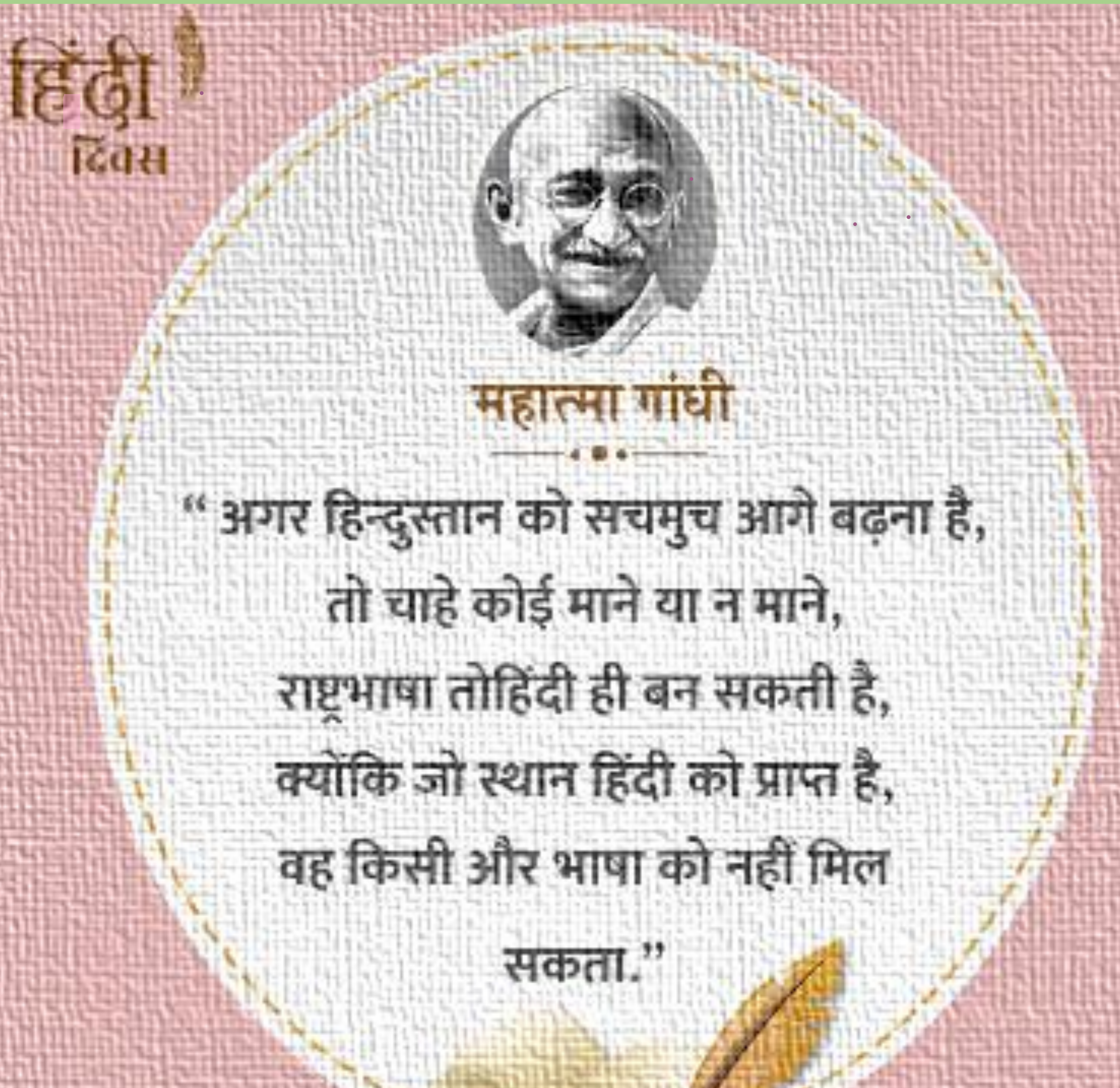
हिंदी
दिवस
महात्मा गांधी
" अगर हिन्दुस्तान को सचमुच आगे बढ़ना है,
तो चाहे कोई माने या न माने,
राष्ट्रभाषा तोहिंदी ही बन सकती है,
क्योंकि जो स्थान हिंदी को प्राप्त है,
वह किसी और भाषा को नहीं मिल
सकता."

	अनुक्रमणिका		पृष्ठ संख्या
1)	पौष्टिक आहार का प्रभाव	रमेश झा	09
2)	ऐसे निंदक नियरे न राखिए	प्रिया भारती	13
3)	दिव्य कॉमेडी	दीपान्निता दास	15
4)	स्वामी विवेकानंद और नए भारत की कल्पना	प्रिया भारती	31
5)	सिर्फ शादी की उम्र बढ़ाने से नहीं होगा समाधान	प्रिया भारती	37
6)	पिता के नाम एक कुंवारे पुत्र का पत्र	रंजन कुमार	40
7)	वृक्ष	तनुश्री विश्वास	42
8)	उठो भारत के मनुज	निमिषा सिंह	43
9)	अभिलाषा	राजु हाजरा	44
10)	वो बिटिया तू फुलवारी सी	निमिषा सिंह	46
11)	तराजू	अंतिमा जैन	47
12)	लक्ष्य	अंतिमा जैन	48
13)	कर्म	अंतिमा जैन	49
14)	आशा की किरण	अंतिमा जैन	50
15)	क्यों	अंतिमा जैन	51
16)	मेरे हालात ऐसे हैं	विजय कुमार	52
17)	एक ऐसी जगह	संजय कुमार	54
18)	डर लगता है	विजय कुमार	55

पौष्टिक आहार का प्रभाव

रमेश झा
हिंदी अधिकारी

इस कोरोना काल में लोग रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए अनेक तरह के उपाय कर रहे हैं। जैसे कि कोई कसरत कर रहा है, कोई योग के पीछे पड़ा हुआ है और तो और कोई जिम जाकर पसीना बहा रहा है। लेकिन क्या यह सब उपाय करने वाले पूरी तरह से कोरोना के प्रचंड प्रकोप से बच पा रहे हैं? तो इसका सही जवाब होगा नहीं, क्योंकि लोगो द्वारा किए गए उपरोक्त उपाय रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी) बढ़ाने का सिर्फ एकमात्र पहलू नहीं हैं। योग, व्यायाम और जिम इसका एकमात्र उपाय नहीं है, बल्कि इसके साथ-साथ प्रदूषण मुक्त वातावरण एवं सही खानपान भी सम्मिलित होना चाहिए। इस वैश्विक महामारी के दौरान आपने देखा ही होगा कि शांत एवं स्वच्छ वातावरण यानि गाँव में रहने वाले स्वस्थ लोग भी कोरोना के प्रभाव में आकर काल कलवित हो गए। कितने ही लोग कोरोना से संक्रमित हुए लेकिन उन्होंने इस पर आसानी से विजय प्राप्त कर लिया जबकि दूसरी तरफ बहुत से लोग ऐसे भी हैं जिन्हें अपने प्राणों से भी हाथ धोना पड़ा। इसके क्या कारण हो सकते है? इस पर वैज्ञानिकों और चिकित्सकों को शोध करने दीजिए क्योंकि जीवन में एक कोरोना ही ऐसी बीमारी नहीं है जिस पर हमें विजय प्राप्त करना है। इस जीवन में हमारा सामना हर पल नई-नई बीमारियों से होता ही रहता है।

हमें सर्वांग रूप से शरीर को स्वस्थ रखने के लिए स्वस्थ आहार की आवश्यकता होती है। क्या महंगे आहार ही इम्युनिटी को बढ़ाते हैं? क्या स्वादिष्ट आहार ही इम्युनिटी को बढ़ाते हैं, तो ऐसा कतई नहीं है क्योंकि आहार का मंहगा एवं सस्ता होना तो स्थान-स्थान पर निर्भर करता हैं। एक ही शहर में एक ही फल के दाम में जमीन-आसमान का अंतर रहता है। उदाहरण के लिए, अभी कुछ साल पहले मीडिया में एक ख़बर की बड़ी चर्चा थी कि किसी फाइव स्टार होटल ने एक फिल्म अभिनेता से दो केले का दाम 1400 रुपए के आसपास चार्ज किया था जबकि उस समय उसी शहर में उस फल की कीमत मुश्किल से 20 रुपए होगी। जब कोई सब्जी या फल का शुरूआती मौसम में दाम बहुत अधिक रहता है तो क्या अमीर लोग इसे पहले खा कर अपनी इम्युनिटी अधिक बढ़ा सकते हैं ? नहीं, कदापि नहीं, क्योंकि ऐसा किसी अनुसंधान में नहीं पाया गया है कि किसी भी फल या सब्जी

के शुरूआती मौसम में इन फलों या सब्जियों में अधिक विटामिन या मिनरल होते हैं। केवल समय से पहले खाने में मनोवैज्ञानिक रूप से स्वाद का अहसास है।

आपको पौष्टिक आहार क्यों चाहिए ? हमें मुख्य दो कारणों से पौष्टिक आहार चाहिए:-

(1) स्वस्थ शरीर के लिए
(2) स्वस्थ जीवन के लिए

यह बहुत ही आवश्यक है कि यदि आप पौष्टिक और संतुलित भोजन लेते हैं तो आपके द्वारा उपरोक्त लक्ष्यों तक आसानी से पहुंचा जा सकता है। इससे इन बातों की पूर्ति होती है:-

1. शरीर में ऊर्जा के स्तर को बढ़ाता है एवं इसे संतुलित बनाए रखता है।
2. आपको अच्छा महसूस कराता है।
3. स्वस्थ शारीरिक वजन बनाए रखता है।
4. सम्पूर्ण शारीरिक क्रियाओं के लिए अच्छी स्टेमिना (सहन शक्ति) बनाए रखता है।

इन सभी बातों के लिए आपको क्या-क्या करना चाहिए-

आपको सुबह नाश्ते में प्रचुर प्रोटीन युक्त भोजन करना चाहिए। इसे ध्यान से समझ लीजिए और इसे अपना प्रतिदिन का नियम बना लीजिए। यदि आप नाश्ते में उच्च प्रोटीन लेते हैं तो आपका पेट काफी देर तक भरा रहता है जिसकी वजह से दोपहर के खाने में अधिक खाना खाने कि आवश्यकता नहीं पड़ती है। यदि आप उच्च प्रोटीन लेते हैं तो आपका वजन केवल ठीक ही नहीं रहता बल्कि यह धीरे-धीरे घटता जाता है। यदि आप प्रचुर प्रोटीन युक्त आहार लेते है तो रक्त की शर्करा का स्तर ठीक रहता है। तो यह अच्छा प्रोटीन कहां से मिलेगा इसके मुख्य स्रोत हैं :-

1. अंडे
2. पनीर
3. टोफू - सोया दही का पनीर (Tofu)
4. मूंग चिल्ला, बेसन चिल्ला
5. चिया के बीज(Chia Seeds)
6. मशरूम

इत्यादि से प्रचुर मात्रा में प्रोटीन मिलेगा। अतः आप अपने आहार में इसे एक नंबर पर रखिए। दूसरे नंबर पर आता है- फाइबर युक्त आहार। आपके द्वारा खाए गए प्रत्येक भोजन में फाइबर का कुछ अंश अवश्य होना चाहिए। आपके द्वारा 24 घंटों में ग्रहण किए गए भोजन में फाइबर का हिस्सा लगभग 35 ग्राम होना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि एक बार में ही 35 ग्राम फाइबर खा लिया जाए। इसे हर भोजन में शामिल किया जाना चाहिए। भोजन में यह बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। भोजन में फाइबर का निम्नलिखित महत्व है :-

- उचित पाचन के लिए महत्वपूर्ण है
- कब्ज से छुटकारा मिलता है
- पेट भरा महसूस कराता है
- कोलेस्ट्रॉल को घटाता है
- रक्त में शर्करा की मात्रा को संतुलित बनाए रखता है

आखिर फाइबर कहाँ से मिलेगा तो फाइबर के स्रोत निम्नलिखित है:-

- फल
- सब्जी
- ओट्स (Oats)
- जौ
- अनाज/दाल
- नट्स और बीज
- ब्राउन चावल

ये सभी फाइबर से भरपूर होते हैं। अपने भोजन में नंबर 3 पर वसा को रखिए। लोगों का मानना है कि वसा बहुत ही खतरनाक है लेकिन ऐसा नहीं है। अमेरिकी मानक को लोगों द्वारा गलत ढंग से समझने के कारण यह भ्रांति समाज में आ गई है। अमेरिका में लोगों को कम वसा खाने की सलाह दी गई क्योंकि वहाँ के लोग अपने भोजन में वसा को 45% तक शामिल करते थे जबकि भारतवासी अपने भोजन में वसा मुश्किल से 15% तक ही शामिल कर पाते है।हमें अपने भोजन में अच्छी वसा को शामिल करना चाहिए। हरेक वसा आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं होती है। वसा अनेक प्रकार के होते हैं और ये स्वास्थ्य को बेहतर बनाते हैं। विटामिन को शरीर में अवशोषित करने के लिए वसा की आवश्यकता होती है। विटामिन **ए, ई, डी** एवं **के** ये चार वसा में घुलनशील होते हैं।यदि आप उचित मात्रा में वसा नहीं लेंगे तो ये विटामिन आपके शरीर में अवशोषित नहीं हो पाएंगे।

अपने भोजन में 4 नंबर पर कॉम्पलेक्स कार्बोहाइड्रेट को रखिए। कार्बोहाइड्रेट दो प्रकार के होते है- कॉम्पलेक्स और सिपंल कार्बोहाइड्रेट। सिपंल कार्बोहाइड्रेट हमारे लिए फायदेमंद नहीं है जबकि कॉम्पलेक्स कार्बोहाइड्रेट शरीर के लिए आवश्यक है। यह उपापचय की क्रिया को ठीक रखते हैं। कॉम्पलेक्स कार्बोहाइड्रेटस युक्त मल्टीग्रेन अनाज इस्तेमाल करें। ओट्स (जई) और ज्वार आदि में यह बहुतायत होता है।

आहार में पाँचवें नंबर पर हरी पत्तेदार सब्जी रहनी चाहिए। इनके अंदर बहुत से खनिज अवयव रहते हैं। अंत में पाँच महत्वपूर्ण बातों को सदैव ध्यान में रखें:-

- ✓ उच्च प्रोटीन युक्त नाश्ता
- ✓ फाइबर युक्त भोजन
- ✓ अच्छी वसा युक्त भोजन
- ✓ कॉम्पलेक्स कार्बोहाइड्रेटस युक्त भोजन करना
- ✓ खाने में हरी पत्तेदार सब्जी को शामिल करना

अपने कार्य के आधार पर आहार ग्रहण करें। यदि आप शारीरिक श्रम करते हैं तो उसी अनुरुप आहार लें। बैठ कर काम करते हैं तो कम आहार लें। ऋतुओं में मिलने वाले फल एवं सब्जियों को अवश्य लें। स्वस्थ शरीर में ही इस जीवन का आनंद लिया जा सकता है। जैसा कि किसी ने क्या खूब कहा है-

"पहला सुख , निरोगी काया ,

दूजा सुख धन और माया।"

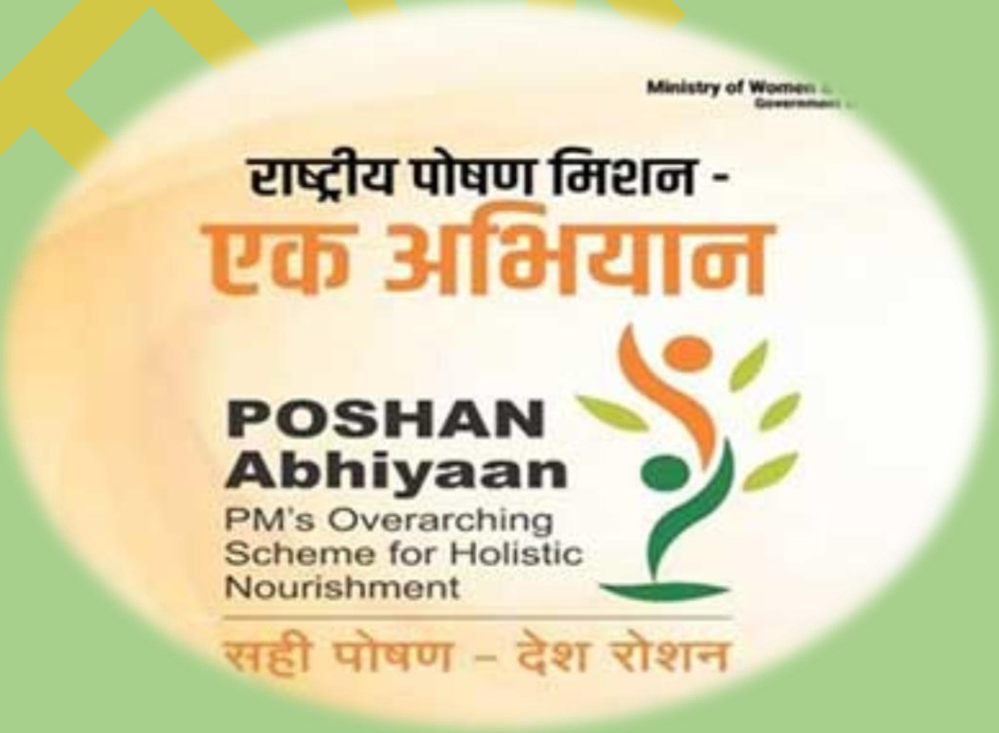

ऐसे निंदक नियरे न राखिए

प्रिया भारती

एम.टी.एस.

हम सब ने अपने विद्यार्थी जीवन में रहीम का यह दोहा अवश्य पढ़ा है –

निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय ।

बिन पानी साबुन बिना, निरमल करे सुभाय ।

अर्थात् अपनी निंदा करने वाले लोगों को हमेशा अपने आस-पास रखना चाहिए क्योंकि यही वे लोग होते हैं, जो बिना पानी और साबुन के हमारे स्वभाव को निर्मल बनाते हैं।

परंतु क्या निंदक हमेशा ही हमारे लिए अच्छे होते हैं? क्या हमें हमेशा ही उनकी बातों पर ध्यान देना चाहिए? और उनके अनुसार अपना स्वभाव बदलने की कोशिश करनी चाहिए?

आपका सामना कई बार ऐसे लोगों से हुआ होगा, जो केवल आपकी निंदा करने के लिए ही निंदा करते हैं। या फिर जब आप उनके अनुसार कोई काम नहीं करते या उनके स्वार्थ की पूर्ति नहीं करते तब वे आपकी निंदा करना शुरू करते हैं। कभी-कभार लोगों में दूसरों की निंदा करने की प्रकृति जलन और कुंठा से उपजी हुई भी होती है। आजकल सोशल मीडिया पर एक शब्द बहुत प्रचलित है- 'ट्रोल'। इनका काम ही होता है किसी व्यक्ति की इतनी निंदा कर देना कि उसका आत्मविश्वास ही खत्म हो जाए। तो क्या हमें ऐसे लोगों की निंदा पर ध्यान देना चाहिए? क्या हमें उनसे प्रभावित होकर अपनी कार्यशैली और जीवनशैली बदलनी चाहिए? बिल्कुल नहीं।

परंतु इसका यह मतलब यह नहीं कि हमें निंदा पर ध्यान ही नहीं देना चाहिए। ऐसा करने से हमारे व्यक्तित्व का विकास रुक जाएगा। इस समस्या से बचने के लिए हमें एक मध्यम मार्ग अपनाना चाहिए। अकारण निंदा करने वालों से दूरी बनानी चाहिए क्योंकि ऐसे लोगों की बातों पर ध्यान देने से हमारा आत्मविश्वास कम होने लगता है।

हमें अपने आसपास कुछ ऐसे विश्वसनीय लोगों को रखना चाहिए, जो अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर नहीं बल्कि हमारे व्यक्तित्व में सुधार की कामना से हमारी निंदा करते हों। इसी प्रकार की निंदा को 'क्रिएटिव क्रिटिसिज़म् ' कहा जाता है। यह हमारे व्यक्तित्व में सुधार करता है और हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाता है। इसलिए निंदक लोगों को नियरे रखने से पहले पहचान भी कीजिए।

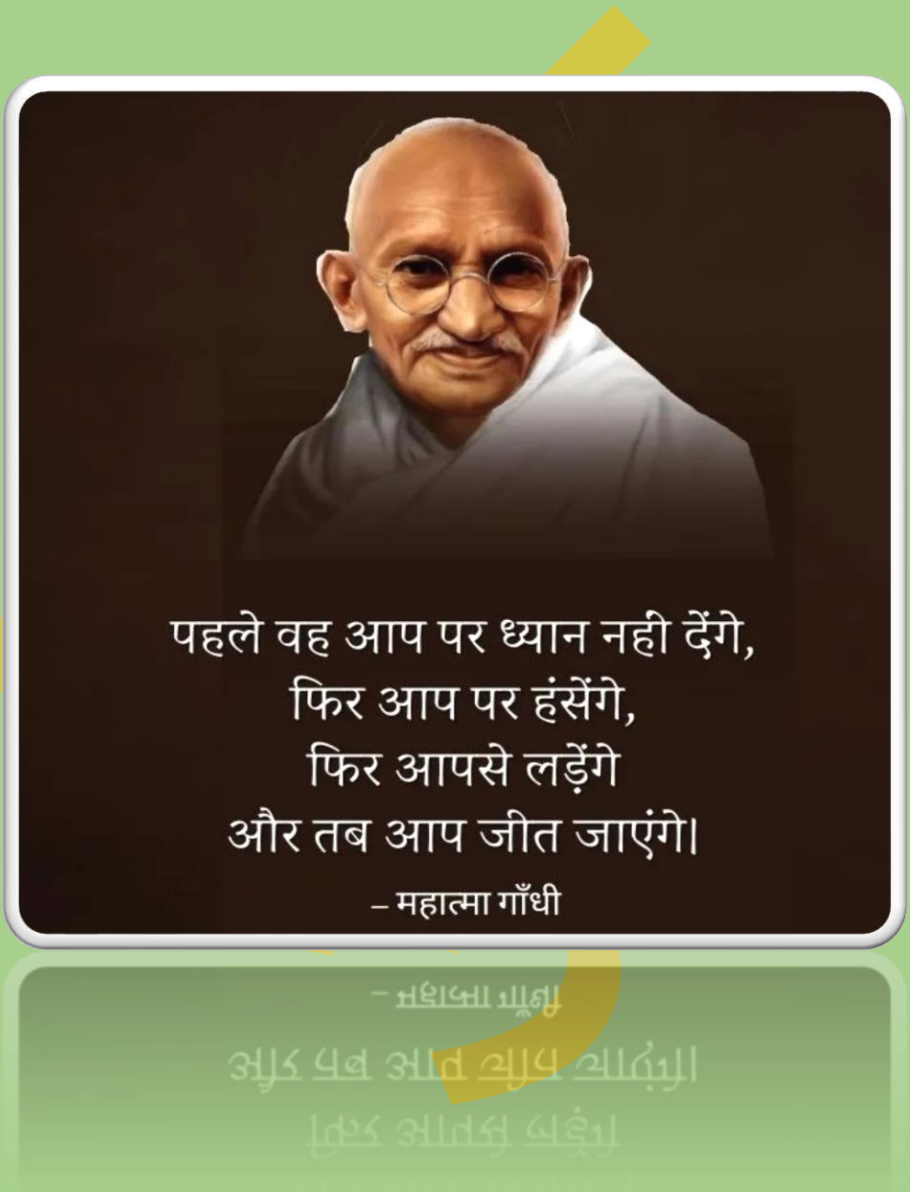

दिव्य कॉमेडी

दीपान्निता दास

कनिष्ठ अनुवादक

वैश्विक लोक साहित्य और संस्कृति का इतिहास कहीं न कहीं प्रेम गाथाओं का ही इतिहास रहा है। लोग कहते हैं कि सच्चा प्रेम अदृश्य होता है। लेकिन अदृश्य होने के बावजूद भी दुनिया में परम्परागत रूप से एक से बढ़कर एक प्रेम गाथाएं जनसमुदाय में आज भी उतनी ही जीवंत हैं, जितनी सैंकड़ों हज़ारों वर्ष पूर्व हुआ करती थीं, जैसे – नल-दमयन्ती, लैला-मजनूँ, सोहनी-महिवाल, रोमियो-जूलियट, हीर-राँझा, आदि।

परन्तु जहा इस न दिखाई देने वाले – अदृश्य प्रेम का ज़िक्र होता है, उस धरातल पर, एक प्रेम गाथा, जो अत्यंत अद्भुत, अद्वितीय और अद्यतन प्रतीत होती है, सम्भवत: आप में से भी बहुतों को पसन्द हो; वह है महान इतावली कवि साहित्यकार, *दांते एलीघियरी (Dante Alighieri) का* महाकाव्य ***'द डिवाइन कॉमेडी'*** – जिसका मूल इतावली संस्करण ***'ला दिविना कॉमिडिया'*** *(La Divina Commedia)* के नाम से विश्वप्रसिद्ध है।

दांते का यह अद्वितीय महाकाव्य उनकी एक ऐसी अप्रतिम कृति है जिसे विश्व की प्रेम गाथाओं के इतिहास में एक अदृश्य प्रेम का दर्जा प्राप्त है।

दांते की स्वयं की प्रेम कहानी कुछ इस प्रकार है। दांते का जन्म इटली के फ्लोरेंस नगर में 1265 ईसवी में हुआ था। वह अपनी प्रेमिका बिएट्रिस (Beatrice) से पूरे जीवन में कुल और केवल तीन बार मिले थे।

पहली बार जब दोनों ने एक दूसरे को देखा था तब वह बालक थे और केवल 9 वर्ष के थे। ऐसा कहा जाता है कि जब उम्र के इस पड़ाव में उन दोनों की भेंट हुई तब दांते से कहा कुछ भी नहीं गया – वह बस टकटकी लगाए देखते रहे और बिएट्रिस भी उस समय मौन रह गई – दोनों ने आपस में कहा कुछ भी नहीं।

लगभग 9 वर्ष बाद उनकी दूसरी मुलाकात भी हुई जब दोनों 18 वर्ष के हो गए थे। यद्यपि बिएट्रिस ने अत्यंत श्रद्धाभाव से उन्हें नमन किया, अभी भी दोनों के बीच प्रेम की घनीभूत अनुभूति के बावजूद , शब्दों का आदान-प्रदान नहीं था, बस मौनाभिव्यक्ति थी...

अपने प्रेम के उच्चस्थ शिखर पर, दांते अपने साथ बिएट्रिस को पाते – महसूस करते – पर मुँह से एक शब्द भी नहीं बोलते थे।

बिएट्रिस भी उनकी महानता को, उनकी प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि को जानती थी – स्वीकार करती थी, परन्तु उसे आभास तक नहीं था कि इटली का महानतम कवि साहित्यकार, उसका प्रेम उपासक है।

बिएट्रिस का विवाह भी अन्यत्र हो गया। दांते ज़रा भी विचलित नहीं हुए। अपनी साहित्य साधना में वह डूबते गये। बिएट्रिस के प्रति प्रेम ही उनकी प्रेरणा थी। बिएट्रिस का वैवाहिक जीवन बस कुछ वर्षों का ही रहा। 35 वर्ष की अवस्था में ही बिएट्रिस की मृत्यु हो गई।

अपनी प्रेमिका की आकस्मिक मृत्यु पर दांते ने लिखा – *"मेरे जीवन की सारी खुशियां चली गईं। मैं सूना नहीं अपितु शून्य हो गया -निराश, निरानन्द, भग्न हृदय का हो गया।"*

इसी निराशावस्था में उन्होंने अपने दिव्य महाकाव्य **'*द डिवाइन कॉमेडी*'** की रचना की।

अक्सर जीवन में, हम एक ऐसे चौराहे पर आ जाते हैं जहां हमें वह एक निर्णय लेना होता है जो उस मार्ग को प्रभावित करेगा जो कि हमारे जीवन को उस बिंदु से आगे ले जाए। दांते एलीघियरी को उनके प्यारे शहर फ्लोरेंस से राजनीतिक संबद्धता के कारण निर्वासित कर दिया गया था और फिर उन्होंने एक महिला से अनुबंधित रूप में विवाह किया था जिसे वह प्यार नहीं करते थे, जबकि जिनसे वह प्यार करते थे वह 35वर्ष की उम्र में ही गुज़र गयीं थीं।

उन्होंने जब खुद को एक वृद्ध व्यक्ति के रूप में पाया तब वह यह पता लगाने की कोशिश कर रहे थे कि जीवन में उनका मार्ग उन्हें इस मुकाम तक क्यों ले आया है। वह अपने लिए एक काल्पनिक यात्रा बनाते हैं, जिसे

बाद में ***द डिवाइन कॉमेडी*** के रूप में जाना जाता है, जिसमें उन्होंने खुद को तीन आध्यात्मिक क्षेत्रों से गुजरते हुए देखा; नर्क ***(इन्फर्नो – Inferno)***, पाप शोधनालय अथवा पर्गेटरी ***(पर्गेटोरियो – Purgatorio)*** और अंतत: स्वर्ग ***(पैराडिसो – Paradiso)*** ।

'द डिवाइन कॉमेडी' एक लंबी कविता है जिसे 100 खंडों में विभाजित किया गया है, जिन्हें ***'कैंटो'*** कहा जाता है। ***इन्फर्नो*** में इनमें से पहले 34 कैंटो शामिल हैं।

'इन्फर्नो'

इन्फर्नो की शुरुआत में, दांते खुद को 'डार्क वुड ऑफ एरर्स'(Dark Wood of Errors)में खोये हुये पाते हैं, जहां 'माउंट ऑफ जॉय'(Mount of Joy) के लिए उनका रास्ता 'दुनियादारी के तीन जानवर' (Three Beasts of Worldliness) – दुर्भाव व कपट का तेंदुआ (The Leopard of Malice and Fraud), हिंसा व महत्त्वाकांक्षा का शेर (The Lion of Violence and Ambition) और असंयम की भेड़ीनी (The She-Wolf of Incontinence) रोक रहे होते हैं। सौभाग्य से, महान रोमन कवि वर्जिल (Virgil) , जो यहां मानवीय विवेक (human reason) का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रकट होते हैं और दांते को नर्क के नौ चक्रों के माध्यम से उनकी आध्यात्मिक यात्रा पर मार्गदर्शन करने का प्रस्ताव रखते हैं। अंततः दांते की भेंट यहां बिएट्रिस से होगी जो न केवल दिव्य प्रेम के प्रतीक के रूप में उनके समक्ष अवतरित होगी अपितु *'माउंट ऑफ जॉय'*तक पहुँचने हेतु भी उनका मार्गदर्शन करेगी। अपने इस दृष्टांतिक यात्रा के अंत तक, दांते को यह उम्मीद है कि वह खुद को, अपनी स्थिति को, बेहतर ढंग से समझ पाएगा और अपने निर्वासन सहित शांति से रहेगा।

दांते के ***'द डिवाइन कॉमेडी'*** को पूरा करने के कुछ ही समय बाद, 56 वर्ष की आयु में वह मृत्यु को प्राप्त हुये – अपने प्रिय शहर फ्लोरेंस को फिर कभी नहीं देखने के लिए।

कैंटो –I

गुड फ्राइडे है और दांते अब 35 वर्ष के हो गये हैं। उन्हें ज्ञात होता है कि वह ***'डार्क वुड ऑफ एरर्स'*** में भटक गये हैं। वह ***'माउंट ऑफ जॉय'*** को देख तो पाते हैं, जहां वह जानते हैं कि उनकी खुशियां बसी हुयी हैं, लेकिन उनका रास्ता तीन भयानक जानवरों – *दुर्भाव व कपट का तेंदुआ, हिंसा व महत्त्वाकांक्षा का शेर* और *असंयम*

की भेड़ीनी – द्वारा अवरुद्ध है। स्वयं को उनके बीचोबीच हताश, भयभीत और अकेला पाकर,दांते को ऐसा लगता है कि इन जानवरों से आगे निकलने की कोई उम्मीद नहीं है।

अचानक, महान रोमन कवि वर्जिल, जो यहां मानवीय विवेक का प्रतिनिधित्व करते हैं, दांते के सामने प्रकट होते हैं और उन्हें इन भयंकर जानवरों से दूर ***'माउंट ऑफ जॉय'*** पर ले जाने का प्रस्ताव रखते हैं। उन्हें पहले नर्क से होते हुए नीचे उतरना होगा, जो ***पाप की पहचान*** *(Recognition of Sin)* का प्रतिनिधित्व करता है। वर्जिल यहां पर दांते को समझाते हैं कि फिर उन्हें ईसाई जीवन का प्रतिनिधित्व करते हुए पर्गेटरी के माध्यम से चढ़ना होगा, जहां उसकी मुलाकात बिएट्रिस से होगी, जो स्वर्ग तक पहुँचने के लिए अंतिम चढ़ाई करने का भार ग्रहण करेंगी, जो स्वर्ग और भगवान तक पहुँचने हेतु आत्मा की चढ़ाई का प्रतिनिधित्व करता है। वर्जिल फिर दांते को यह समझाते हैं कि वे अब यहां पापों की गंभीरता के अनुसार, पीड़ा के विभिन्न स्तरों में आत्माओं की एक श्रृंखला को देखेगा।

कैंटो – *II*

वर्जिल यहां समझाते हैं कि दांते के लंबे समय से खोये हुये प्यार बिएट्रिस ही ने उन्हें इस यात्रा पर दांते का मार्गदर्शन करने के लिए व्यक्तिगत रूप से चुना, क्योंकि उनके पास प्रेरक शब्दों का साथ है। यहां दांते बिएट्रिस का आभारी होता है, और इस बात से उत्साहित होता है कि बिएट्रिस अभी भी आध्यात्मिक क्षेत्र के दायरे में उसकी तलाश में है।

कैंटो – *III*

फिर वर्जिल और दांते नर्क के द्वार पर आते हैं, जो अब इन कुख्यात शब्दों के साथ खुदा हुआ है –

"वे अपनी सभी आशाओं को पीछे छोड़ दें, जो यहां प्रवेश करते हैं।"

नरक की 'दहलीज' से होते हुए, उसके भयंकर द्वार के आर-पार, जो आत्माएं निवास करती हैं, उनको *'अवसरवादि'* के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपने जीवन में न तो बुराई को चुना और न ही अच्छाई को – केवल खुद को। स्वर्ग में महान विद्रोह में पक्ष लेने से इनकार करने वाले स्वर्गदूतों को भी इस स्तर पर पाया जा सकता है। इस स्तर की आत्माएं एक लहराते हुए बैनर का पीछा करते हुए बेकार दौड़ती रहती हैं जिसे वे कभी पकड़ नहीं सकतीं हैं।

जब वे दौड़ती हैं, तो ततैया (wasps) और भिड़ (hornets) उनका पीछा करते हैं जिनके डंक से इन आत्माओं का खून बहता है। उनका यह टपकता हुआ खून जमीन में संक्रमित कीड़ों और मैगॉट्स (maggots) की

भूख मिटाता है। यहाँ दांते एक आत्मा, *पोप क्लैन्डेस्टाइन V (Pope Clandestine V)* को पहचानते हैं, जिन्होंने अपने चुनाव के पांच महीने बाद ही अपना सिंहासन छोड़ दिया था। इस पदत्याग ने *पोप बोनिफेस VIII (Pope Boniface VIII)* के लिए मार्ग प्रशस्त किया, जिन्होंने आगे चलकर फ्लोरेंस से दांते को निर्वासित कर दिया।

दांते और वर्जिल ने यहां एक नदी के किनारे पर आत्माओं की एक झुण्ड को *शारॉन (Charon)* के फेरी (ferry) नौके द्वारा पार होने का इंतजार करते हुए देखा। *शारॉन* ने शुरू में दांते को नर्क में प्रवेश करने की अनुमति देने से इनकार कर दिया, क्योंकि वह अभी भी जीवित हैं, लेकिन वर्जिल ने उसे मना लिया। दांते यहां इतना भयभीत हो जाते हैं कि वह बेहोश हो जाते हैं, और अपनी नौके की सवारी के अंत तक जाग नहीं पाते हैं।

कैंटो – *IV*

नर्क के पहले स्तर, या चक्र, को ***लिम्बो*** *(Limbo)* कहा जाता है। बपतिस्मा-विहीन (unbaptised) और सदाचारी पेगन (Pagan) आत्माएं – जैसे जूलियस सीज़र*(Julius Caesar),* *यूक्लिड (Euclid),* *अरस्तू (Aristotle)* और स्वयं वर्जिल – इस स्तर पर निवास करते हैं। इन्हें स्वर्ग में समाविष्ट तो नहीं किया जा सकता, परन्तु उन्हें केवल उसके इस छोटे से आयाम में रहने हेतु दंडित किया जाता है।

कैंटो –*V*

नर्क के दूसरे चक्र की ओर बढ़ते हुए, कवियों का मार्ग यूनानी द्वीप नगर क्रेट *(Crete)* के प्राचीन राजा ***मिनॉस*** *(Minos)* द्वारा अवरुद्ध है। हालांकि वे अत्यंत अत्याचारी थे, परन्तु अपने ज्ञान और न्याय के लिए जाने जाते थे, जिसने उन्हें मृतकों का न्याय करने के लिए ***'नरक का आदर्श न्यायाधिपति'*** *(The Infernal Judge)* बना दिया। दांते यहां उन्हें पूंछ वाले एक भयानक राक्षस के रूप में चित्रित करते हैं, क्योंकि वह जो काम कर रहे थे वह अत्यंत ही राक्षसीय था।

वहां से होकर गुज़रने के लिए वर्जिल ***मिनॉस*** को मना लेता है, अब वह और दांते एक ऐसे कगार पर आते हैं जहां वे आत्माओं को एक बवंडर में बहते हुये देखते हैं। ये वे आत्माएं हैं जिन्होंने अपनी शारीरिक भूख के कारण अपने विवेक को धोखा दिया था। सज़ा के तौर पर, वे एक तूफान के माध्यम से नरक के रास्ते बह गये, कहीं न कहीं उसी जुनून की तूफ़ान की तरह जिसमें उन्होंने खुद को पृथ्वी पर रहते हुए डुबो दिया था, और दंड के रूप में उन्हें हमेशा के लिए अपनी गतिविधियों पर नियंत्रण पाने से वंचित कर दिया गया।

इन आत्माओं के बीच, वर्जिल यहां डिडो *(Dido), क्लियोपेट्रा (Cleopatra), हेलेन ऑफ ट्रॉय (Helen of Troy), अकिलीज़ (Achilles)* और *पेरिस ऑफ ट्रॉय (Paris of Troy)* सहित कई प्रसिद्ध वासनापूर्ण व्यक्तित्वों की ओर इशारा करते हैं। यहां पर दांते एक दम्पति, *पाओलो (Paolo)* और *फ्रांसेस्का (Francesca)* को उनकी अपनी कहानी साझा करने के लिए बुलाते हैं।

फ्रांसेस्का कभी इटली में स्थित *रवेन्ना (Ravenna)* शहर की उच्च शाही परिवार की एक बहुत प्रसिद्ध महिला थीं। वह एक प्रेमहीन राजनीतिक विवाह में फंस गईं थीं और उन्हें अपने पति के छोटे भाई पाओलो से प्यार हो गया था। जब उनके पति को उनके रिश्ते के बारे में पता चला तो उन्होंने उन दोनों की हत्या कर दी। दांते *फ्रांसेस्का* की कहानी और उनकी पीड़ा की अनुचितता से मर्माहत होता है, शायद इसलिए कि यह अपने जीवन की कहानी के साथ इसके इतने करीब आ जाते हैं कि वह रोते हैं। *पाओलो* भी रोने लगता है। दांते फिर से बेहोश हो जाता है, इसलिए वह अपने आस-पास की आत्माओं के दृश्यों, ध्वनियों और कहानियों से अभिभूत हो जाता है।

कैंटो – VI-IX

नर्क के तीसरे और चौथे चक्र – लालच और लोलुपता – से गुज़रते हुए उतरने के बाद, वर्जिल और दांते पांचवें स्तर (क्रोध) और ***डिस*** *(Dis)* शहर तक पहुंचते हैं, जो ऊपरी नरक और निचले नरक के बीच विभाजन को चिह्नित करता है। कवियों का सामना यहां आग से दंडित होने के कई दृश्यों से होता है, जो कि नर्क के आधुनिक चित्रण से जुड़ा हुआ है।

यहां के प्रारंभिक सतह पर तीन सिरों वाले ***सेरबेरस*** *(Cerberus)* और अंतिम सतह पर धन के अधिपति, ***प्लूटस*** *(Plutus)* अपना न्यायाधिपत्य दर्शाते हुये कवियों को नज़र आते हैं ।यहां के प्रथम स्तर पर भक्षकों (gluttons) एवं शेष स्तर पर जमाखोरों व अपव्ययियों (hoarders and wasters) को उनके अपराधों के लिए अपने-अपने न्याय क्षेत्रों के निर्णयकर्ताओं द्वारा दिये गये भयंकर दंड झेलने पड़ते हैं।

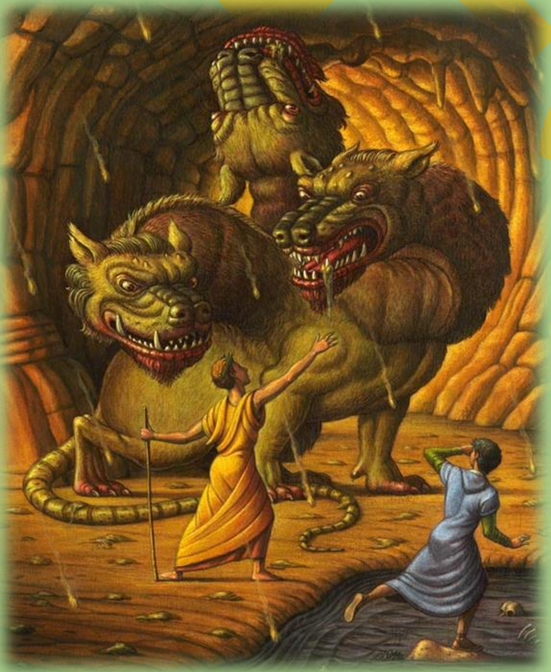

कैंटो – *X*

नरक के छठे चक्र में, वे उन लोगों की छाया देख पाते हैं जिन्होंने विधर्म किया, या सच्चे ईसाई मार्ग को नकार दिया। यहां अधिकांश आत्माओं ने यूनानी दार्शनिक *एपिक्यूरस (Epicurus)* की शिक्षाओं का पालन किया, जिन्होंने यह सिखाया कि आत्मा शरीर के साथ ही मर जाती है। नतीजतन, सभी छायाओं को क़यामत आने तक आग से घिरी खुली कब्रों में रहने की सजा दी जाती है – जब कब्रों को बन्द कर दिया जाएगा।

उनमें से एक कब्र में *फ़रीनाता डेल्गी* उबेरती (Farinata delgi Uberti) हैं, जिन्होंने उस राजनीतिक दल का नेतृत्व किया था जिसका दांते और उनके परिवार ने विरोध किया था, और कैल्वाकांते दे कैवलकांति (Calvacante dei Cavalcanti) हैं, जिनका बेटा, गाइडो (Guido), दांते का एक अच्छा दोस्त था। *कैवलकांते* यह जानना चाहते हैं कि उनका बेटा दांते के साथ क्यों नहीं है, और दांते के अस्पष्ट जवाब से *कैवलकांते* को विश्वास हो जाता है कि गाइडो मर चुका है। वह निराशा में अपनी ज्वलंत कब्र में वापस गिर जाते हैं। *फ़रीनाता* बीच में आती हैं और पुराने राजनीतिक विवादों को फिर से शुरू करती हैं।

जब वे बोलते हैं, दांते को पता चलता है कि मृत भविष्य देख सकते हैं, लेकिन वर्तमान नहीं। दांते तब *फ़रीनाता* को *कैवलकांते* से यह कहने का निर्देश देते हैं कि उनका बेटा गाइडो आखिरकार जीवित है, क्योंकि *गाइडो* वर्तमान को जानने के लिए नहीं देख सकता है। वर्जिल को दांते को दूर खींचना पड़ता है, यह कहते हुए कि बिएट्रिस उसे वह सब कुछ बतायेगी जो उसे बाद में जानने की जरूरत है; परन्तु अभी के लिए, उन्हें चलते रहना चाहिए।

कैंटो – *XI-XVI*

दांते और वर्जिल अब नर्क के सातवें चक्र से गुजरते हैं, जो ***मिनोटौर*** *(Minotaur)* – ***नरवृषभ*** – द्वारा संरक्षित है, जहां हिंसक को दंडित किया जाता है। इसे तीन उपखंडों में विभाजित किया गया है और इसमें युद्ध कुशलों, आत्महत्याकारों, सूदखोरों और ईशनिंदा करने वालों को शामिल किया गया है।

कैंटो – *XVII-XXV*

पंखों वाले राक्षस की पीठ पर सवार होकर, *गेरोन (Geryon)*, वर्जिल और दांते नरक के आठवें चक्र की *बोल्गी* (bolgie) – या खाई – में प्रवेश करते हैं, जहां रहनी वाली ऐसी आत्माओं को वे दंडित होते हुये देख पाते हैं जो किसी न किसी प्रकार की धोखाधड़ी में लिप्त रही हैं। इस चक्र को दस बोल्गियों में विभाजित किया गया है, पहले सात में सभी प्रकार की धोखाधड़ी करने वाली आत्माएं शामिल हैं, जैसे कि बहकाने वाले (कैंटो XVIII), झूठे भविष्य वक्ता (कैंटो XX), पाखंडी (कैंटो XXIII), और चोर (कैंटो XXIV और XXV)।

कैंटो – XXVI

कपटपूर्ण परामर्श देने के कारण दोषी पायी गयी आत्माएं दांते और वर्जिल को इस चक्र की आठवीं बोल्गी में अपनी-अपनी व्यक्तिगत लौ से घिरी हुई नज़र आती हैं।

उनमें से प्रसिद्ध नायक *यूलिसिस (Ulysses)* – यूनानियों के लिए *ओडीसियस (Odysseus)* –और *डायोमेडिस् (Diomedes)* हैं, जिन्होंने ट्रॉय शहर के खिलाफ *यूलिसिस* द्वारा किये गये कई हमलों में उनकी सहायता की थी।

दांते, अपने लेखकीय चरित्र के विपरीत, प्रसिद्ध अंधे भविष्य वक्ता – *ऑरेकल (Oracle)* – *टायर्सियस* (Tiresias) द्वारा दी गई भविष्यवाणी के आधार पर, *यूलिसिस* की कहानी को फिर से लिखने का अवसर प्राप्त करते हैं।

इस संस्करण में, *यूलिसिस* ने अपने अंतिम दिन *आयोनियन सागर (Ionian Sea)* में अवस्थित द्वीप नगर *इथका(Ithaca)* के अपने घर में नहीं बिताया, बल्कि इसके बजाय दक्षिणी गोलार्ध (southern hemisphere) और ***माउन्ट ऑफ पर्गेटरी*** *(Mount of Purgatory)* की यात्रा की। *यूलिसिस* और उसके लोग शुरू में तो

आनन्दित हुए, लेकिन जल्द ही गहरे शोक में डूब गए क्योंकि एक बवंडर ने उनके पूरे जहाज को नष्ट कर दिया, और उस पर सवार सभी यात्रियों की मृत्यु हो गई।

कैंटो – XXVII-XXX

नरक के आठवें चक्र की अंतिम दो बोल्गियों में ***सोवर्स ऑफ डिस्कॉर्ड*** *(Sowers of Discord)* हैं, जहां दानवों और कीमियागारों (alchemists), धोखेबाजों और शपथ तोड़ने वालो को अपने अपराधों का दंड भोगने हेतु उन्हें सड़ने के लिए छोड़ा जाता है – जो कई बीमारियों से पीड़ित हैं – और इस तरह से वे समाज पर खुद को एक 'बीमारी' के रूप में दर्शाते हैं।

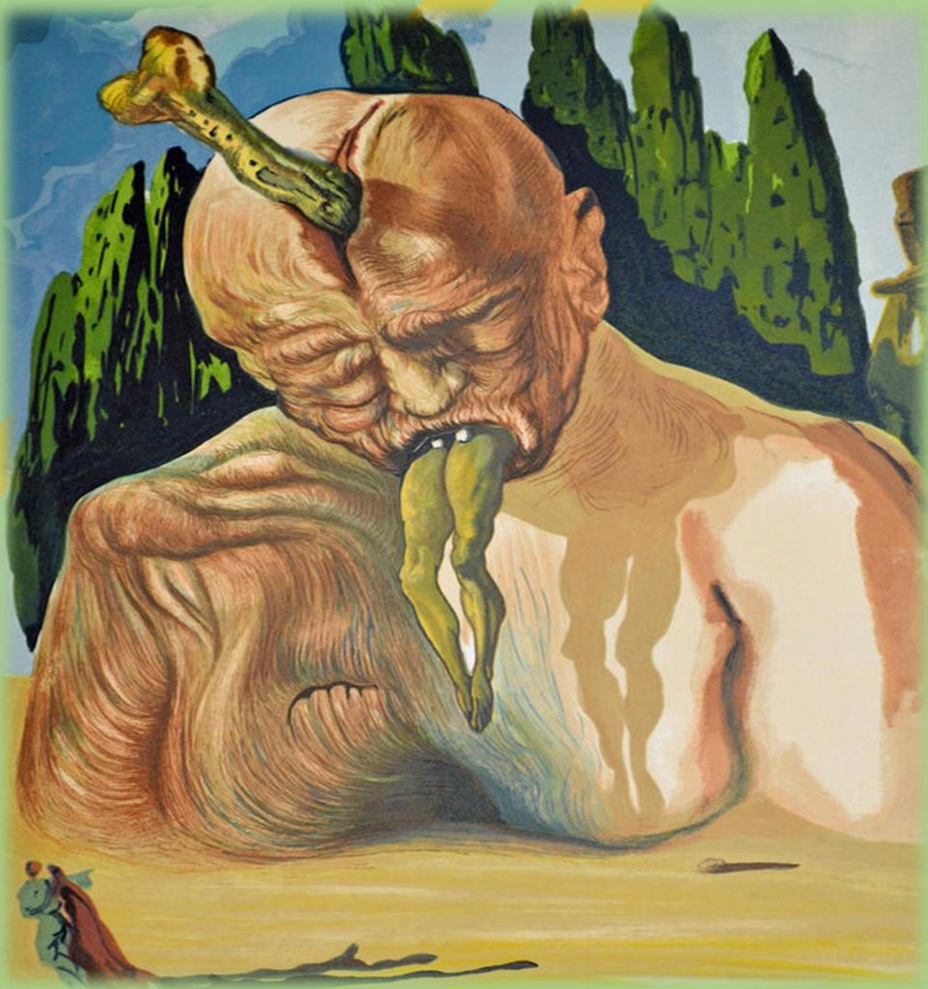

कैंटो – *XXXI-XXXIV*

नर्क का नौवां और अंतिम चक्र देशद्रोहियों के लिए आरक्षित है। इसके केंद्र में ***जुडेका*** *(Judecca)* है, जहां *लूसिफर (Lucifer)* – या शैतान – एक बर्फीली झील में कैद है। उसके पास अपने विशालकाय पंख हैं जिन्हें वह नर्क के नौवें स्तर की बर्फीली हवाओं को हवा देते हुए फहराता है। यह शैतानी हवा दुनिया की सभी बुराइयों को आज़ाद करने का प्रतिनिधित्व करती है।

जुडेका का नाम स्वयं *यहूदा इस्करियोति (Judas Iscariot)* के नाम पर रखा गया है, वह शिष्य जिसने यीशु को चांदी के तीस टुकड़ों के लिए *गेथसमेन्* के बगीचे (Garden of Gethsemane)की महासभा में धोखा दिया – जिससे यीशु को सूली पर चढ़ा दिया गया।

जो आत्माएं अपने स्वामी से गद्दारी करती हुयी पायी जाती हैं, उन्हें यहां विशाल शिलाखंडों में फंसाकर रखा गया है। *लूसिफर* उस स्तर के बीच में बैठता है, जहाँ अपराध बोध की सभी नदियाँ निरंतर बहती रहती हैं। वह बचने के लिए अपने पंखों को फड़फड़ाता है, लेकिन बर्फीली हवाएं उसे वहां और भी स्थिर कर देती हैं।

लूसिफर के भिन्न चेहरे हैं। अपने मुंह में वह *यहूदा (Judas), ब्रूटस (Brutus) और कैसियस (Cassius)* को चबा रहा होता है, जो सभी अपने-अपने स्वामियों के शाश्वत गद्दार हैं जिन्होंने उन पर कभी भरोसा किया था।

वर्जिल और दांते स्तंभित होकर यह सारे भयानक दृश्य देखते हैं और फिर केंद्र के माध्यम से चढ़ना शुरू करते हैं, खुद शैतान पर चढ़ते हैं, जहां वे पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के केंद्र से गुजरते हैं और इस अंतिम स्तर को पार करके नरक से बाहर निकलते हैं।

उनके सामने अब पर्गेटरी का विषम पहाड़ – ***माउन्ट ऑफ पर्गेटरी*** – मंडराता है, और यहां से वे दोनों समय बर्बाद न करना चाहते हुये, आगे बढ़ते हैं ...

स्वामी विवेकानंद और नए भारत की कल्पना

प्रिया भारती

एम.टी.एस.

"मैंने देखा भूतल पर एक ऐसा भी इंसान,

जिसे देख झुका जाता है भावों का भगवान ।"

स्वामी विवेकानंद सचमुच ऐसे ही महामानव थे जिनके बारे में जितना भी कहा जाए कम ही होगा। अद्भुत प्रतिभा और बेजोड़ स्मृति के धनी स्वामी विवेकानंद का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि दुनिया के बड़े से बड़े व्यक्ति भी इनके आगे नतमस्तक हो जाते थे। बचपन से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण धर्म, विज्ञान, दर्शन शास्त्र और अध्यात्म में उनकी गहरी रुचि थी। विदेशों में भारतीय संस्कृति की सुगंध बिखरने वाले स्वामी विवेकानन्द एक ऐसे आध्यात्मिक गुरु थे, जिन्होंने धर्म को व्यवहारिक बनाया तथा भारतीय सभ्यता के निर्माण और संस्कृति के प्रसार के लिए हमेशा समर्पित रहे। वे सच्चे अर्थों में युवाओं के प्रेरणा स्रोत और युवा भारत के स्वप्नदृष्टा थे। 'तुम अपनी अंतरात्मा को छोड़ कर किसी और के सामने सिर मत झुकाओ' कहने वाले स्वामी विवेकानंद आत्म गौरव की अनूठी मिसाल हैं।

गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर ने एक बार कहा था - 'यदि आप भारत को जानना चाहते हैं तो विवेकानंद को पढ़िए। अपने शब्दों से दुनिया जीत लेने का हुनर रखने वाले स्वामी विवेकानंद ने 1893 में आयोजित शिकागो की धर्म संसद में जब 'भाइयों और बहनों' का संबोधन किया तो सभागार में कई मिनट तक तालियां बजती रहीं । इस धर्म संसद में उन्होंने भारत के ध्यान, योग और वेदांत दर्शन की व्याख्या की। अगले दिन अमेरिका के सभी अखबारों ने पहले पन्ने पर भारत की संस्कृति, ज्ञान और अध्यात्म की गौरव गाथा का एक स्वर में गुणगान किया। यह एकमात्र प्रसंग नहीं है जब स्वामी जी ने भारत और इसकी संस्कृति का प्रतिनिधित्व किया हो। अपने पूरे जीवन काल में उन्होंने

जितने भी देशों की यात्राएं की, जिस भी मंच पर अपने विचार रखे, उसका प्रयोग भारत के ज्ञान, अध्यात्म और काबिलियत का प्रचार करने के लिए किया। यही कारण है कि उन्हें 'आधुनिक भारत का आध्यात्मिक पिता' माना जाता है।

'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'। स्वामी विवेकानंद के उपदेशों का यह सूत्र वाक्य कठोपनिषद से प्रेरित है जिसका अर्थ है- 'उठो जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक रुको मत।' इस एक वाक्य में स्वामी विवेकानंद ने भारत के युवाओं के माध्यम से देश के भविष्य की कल्पना की थी। वे तो यहां तक कहते थे कि मुझे केवल सौ समर्पित युवा मिल जाए तो मैं देश की तस्वीर पूरी तरह बदल सकता हूं। स्वामी विवेकानंद ने युवा शक्ति का आह्वान किया ताकि भारत का भविष्य संवारा जा सके। जिस समय स्वामी विवेकानंद अपने ज्ञान और अध्यात्म की रोशनी पूरी दुनिया में बांट रहे थे उस समय भारत गुलाम था। हमारे स्वतंत्रता सेनानी आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे। उस समय स्वामी विवेकानंद ने केवल राजनीतिक आजादी को ही पर्याप्त नहीं माना, बल्कि भारत की उन्नति के लिए सपने देखे। उन्होंने उस उत्तिष्ठ भारत की कल्पना की, जहां सही मायने में हर वर्ग की उन्नति हो और समावेशी विकास हो।

आदिकाल से हमारा भारत विश्व गुरु रहा है। भारत के ज्ञान विज्ञान और अध्यात्म का पूरी दुनिया में लोहा माना जाता रहा है। परंतु मध्यकाल में बाहरी आक्रमणकारियों द्वारा भारत को लूटने के बाद और औपनिवेशिक काल में अंग्रेजों द्वारा गुलाम बनाए जाने के बाद भारत की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति बद से बदतर होती चली गई। भारत को लूट कर हर दृष्टि से पंगु बना दिया गया। आततायियों द्वारा हमारी संस्कृति को बर्बाद करने की हर संभव कोशिश की गई। जो देश कभी हर तरह से साधन संपन्न था उसके नागरिक लाचार हो गए। जब देश में गरीबी, बेकारी और अकाल की हालत हो तो ज्ञान और अध्यात्म की बात कौन करता? भूखे पेट फिर से विश्वगुरु बनने का सपना कैसे देखा जा सकता था? ऐसे कठिन समय में स्वामी विवेकानंद ने यह कहकर देश के लोगों में नई ऊर्जा का संचार किया कि संघर्ष जितना कठिन होगा जीत उतनी ही शानदार होगी। हमें अपने ध्येय की तरफ लगातार कदम बढ़ाते रहने चाहिए। लक्ष्य बड़ा होगा तो बाधाएं भी बड़ी- बड़ी आएंगी। जिस दिन आपके सामने कोई समस्या ना आए, आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि आप गलत मार्ग पर चल रहे हैं।

हिंद

आज आज़ादी को 75 साल हो चुके हैं परंतु आज के समय में भी हम बेरोजगारी, गरीबी, भ्रष्टाचार और बलात्कार जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं। यह ना केवल भारत के नागरिकों के लिए दु:खदायी है बल्कि पूरे विश्व में भारत की साख में बट्टा लगाता है। जो धन देश के विकास और गरीबी निवारण में खर्च होना चाहिए, उसे भ्रष्टाचारी निगल जाते हैं। ऐसे ही भ्रष्टाचारियों के बारे में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लिखा है- ' चूरन हाकिम लोग जो खाते, सारा हिंद हज़्म कर जाते।' कितनी शर्म की बात है कि विश्व भुखमरी सूचकांक में भारत का स्थान अफ्रीकी देशों के साथ होता है। स्वामी विवेकानंद ने कहा है- "जब तक करोड़ों लोग भूखे और वंचित रहेंगे तब तक मैं हर उस आदमी को गद्दार मानूंगा, जिसने गरीबों की कीमत पर शिक्षा तो हासिल की लेकिन उनकी चिंता बिल्कुल नहीं की।"

एक तरफ जहां हम अंतरिक्ष में रोज नई-नई ऊंचाइयों को छू रहे हैं तो दूसरी तरफ बलात्कार जैसी समस्याएं भारत का सर शर्म से नीचे झुका देती हैं। शहरों के नाम पर हम विकास का दंभ भरते हैं परंतु एक तरफ जहां ऊंचे-ऊंचे भवन, मॉल और चिकनी सपाट सड़कें दिखाई देती हैं, वहीं दूसरी तरफ मलिन झुग्गी बस्तियां भी दिखाई देती हैं। यह विवेकानंद के सपनों का भारत नहीं है। वे तो चाहते थे कि हर व्यक्ति को भोजन, आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध हो सके। यदि देश का एक भी नागरिक इन से वंचित है हम कैसे विश्वगुरु बनने के सपने को पूरा कर सकते हैं?

धर्म और जाति के नाम पर दंगे होना आजकल आम बात बन गई है। वे दंगाई जिन महापुरुषों के नाम पर नारे लगाकर दंगे करते हैं, दरअसल उनके बारे में उन्होंने ना कभी जाना होता है और ना ही पढ़ा होता है। स्वामी विवेकानंद धर्म और जाति के समन्वय पर बल देते हैं। शिकागो धर्म संसद में उन्होंने कहा था- " मुझे गर्व है कि मैं उस धर्म से हूं जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया, हम सिर्फ सार्वभौमिक सहिष्णुता पर विश्वास नहीं करते बल्कि सभी धर्मों को सच के रूप में स्वीकार करते हैं। मुझे गर्व है कि मैं उस देश से हूं जिसने सभी धर्मों और सभी देशों के सताए गए लोगों को अपने यहां शरण दी। मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूं जिसने पारसी धर्म के लोगों को शरण दी और लगातार अब भी उनकी मदद कर रहा है।"

परंतु धर्म के अंधे लोग स्वामी विवेकानंद की इन सीखों पर ध्यान नहीं देते। दूसरे धर्म के प्रति नफरत फैलाकर और हिंसा करके अपने ही धर्म का नाम खराब करते हैं। सांप्रदायिक कट्टरता और इसके भयानक वंशजों के धार्मिक हठ ने लंबे समय से इस खूबसूरत धरती को जकड़ रखा है। उन्होंने इस धरती को हिंसा से भर दिया है और कितनी ही बार यह धरती खून से लाल हो चुकी है। न जाने कितनी सभ्यताएं तबाह हुई और कितने देश मिटा दिए गए। यदि हम चाहते हैं कि हमारा भारत अखंड भारत बना रहे और इस की एकता और संप्रभुता पर कोई आंच ना आए तो हमें स्वामी विवेकानंद की बातों का अनुसरण करना चाहिए। एकता इस धरती की तासीर में है। किसी के बहकावे में आकर अपनों का खून बहाना कहां तक जायज ठहरता है? क्यों हम इन बहरूपिए धर्म गुरुओं से सवाल नहीं पूछ सकते? धर्म में हम तार्किक क्यों नहीं हो सकते? स्वामी विवेकानंद ने भी कहा है- "धर्म को भी विज्ञान की तरह अपने सिद्धांतों की पुष्टि करनी चाहिए।" तमाम अक्रमणों और सांस्कृतिक विध्वंस की कोशिशों के बावजूद यदि भारत अपना सांस्कृतिक अस्तित्व बचाए रखने में सफल हो सका है तो इसका कारण हमारी सहिष्णुता ही है। गंगा- जमुनी संस्कृति इसी सहिष्णुता का फलीभूत रूप है। पूरे विश्व में भारत की पहचान समन्वित संस्कृति के विकास हेतु उर्वर भूमि प्रदान करने वाले देश के रूप में है। उतिष्ठ भारत की इस छवि को सुरक्षित और संरक्षित बनाए रखने के लिए हमें धार्मिक दृष्टि से सहिष्णु और तार्किक बनना होगा।

इसमें किसी को कोई संशय नहीं होना चाहिए कि उतिष्ठ भारत का सपना शिक्षा के मार्ग पर चलकर ही पूरा किया जा सकता है। स्वामी विवेकानंद शिक्षा को देश की ज्यादातर समस्याओं का समाधान मानते हैं। वह सीखने के महत्व के बारे में समझाते हुए कहते हैं- "जीवन में जब तक जीना है तब तक सीखना है, अनुभव ही जीवन का सर्वोत्तम शिक्षक है।" शिक्षा से मनुष्य अपने, अपने परिवार की, समाज की और अपने देश की उन्नति में भागीदार बनता है। शिक्षा हमें एक बेहतर मनुष्य बनाती है। परंतु भारत में शिक्षा का स्तर भी बदहाल स्थिति में है। युवा किताबी ज्ञान लेकर रोजगार पाने की अंधाधुंध दौड़ में भागे जा रहे हैं, परंतु इससे भारत का उत्तिष्ठ भारत बनने का सपना साकार हो पाएगा इसमें संशय है।

जहां का युवा मानसिक रूप से इतना कमजोर हो कि थोड़ी सी असफलता के बाद आत्महत्या के बारे में सोचने लगे या उसमें अपराधिक प्रवृत्ति आ जाए, वह देश कितना आगे जा पाएगा। नए भारत के निर्माण के लिए सबसे ज्यादा आवश्यक है, हमें अपनी शिक्षा पद्धति में बदलाव लाना होगा। हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं जिससे चरित्र निर्माण हो, मानसिक शक्ति का विकास हो, ज्ञान का विकास हो और जिससे हम खुद के पैरों पर खड़े होने में सक्षम बन जाए। खुद के पैरों पर खड़े होने का मतलब देश को इतना मजबूत और आत्मनिर्भर बनाना है कि पूरी दुनिया में कोई आंख ना दिखा सके।

आज हम सामरिक क्षेत्र में धीरे-धीरे आत्मनिर्भर होते जा रहे हैं, अमेरिकन और रूसी आधुनिक हथियारों को टक्कर देने वाले युद्धपोत, लड़ाकू विमान और मिसाइलें बनाने में यदि हम सफल हो पा रहे हैं तो यह केवल और केवल भारत के युवाओं का, उनके शोध का और जज्बे का कमाल है। स्वामी विवेकानंद देश के विकास और मजबूती के लिए शोध को बहुत आवश्यक मानते थे। बहुत कम लोगों को यह बात पता है कि स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा से ही जमशेदजी टाटा ने बंगलुरू में शोध संस्थान की स्थापना की थी, जो भारत के कुछ शुरुआती शोध संस्थानों में से एक है। जिस समय भारत में हम बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में ही स्वयं को अक्षम पा रहे थे उस समय ऐसे असंभव कार्य के बारे में सोचना केवल स्वामी जी के बस की ही बात थी। उनका मानना था कि संभव की सीमा जानने का केवल एक ही तरीका है असंभव से भी आगे निकल जाना। उनकी इसी सोच को आगे बढ़ाते हुए भारत आज चांद और मंगल से भी आगे जा पहुंचा है।

स्वामी विवेकानंद भारत के एक महान व्यक्तित्व थे। जिन्होंने हमारे राष्ट्र और इसकी क्षमता को दुनिया के सामने दिखाया और वैश्विक दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया। भारत का वह गौरव जो इतिहास के पन्नों में गुम हो चुका था, स्वामी जी ने उसे फिर से दुनिया के सामने रखा। भारत कोई झाड़ी नहीं है जो किसी के उखाड़ने से उखड़ जाए, बल्कि यह तो बरगद का पेड़ है जिसकी सभ्यता और संस्कृति की जड़ें धरती में गहराई तक धंसी हुई हैं, जिसका पोषण धर्म के लवण से होता है और जिसकी छाया पूरे विश्व को शीतलता प्रदान करती है। स्वामी विवेकानंद का शिक्षण और दर्शन आज भी प्रासंगिक है और आधुनिक युग के युवाओं का मार्गदर्शन करता है। स्वामी विवेकानंद जी के उत्साही, ओजस्वी एवं अनंत ऊर्जा से भरपूर विचार एवं दर्शन जन-जन को प्रेरणा देते रहेंगे। हमें स्वामी जी की

इस परंपरा को आगे बढ़ाने में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने में भी हिचक नहीं होनी चाहिए। उनके उतिष्ठ भारत की कल्पना को हमें साकार रूप देना होगा-

"जागो भारत का युवा वर्ग

तुमको इतिहास बनाना है,

मिलेगा अतुल आनंद तुम्हें

बस सोया विवेक जगाना है।"

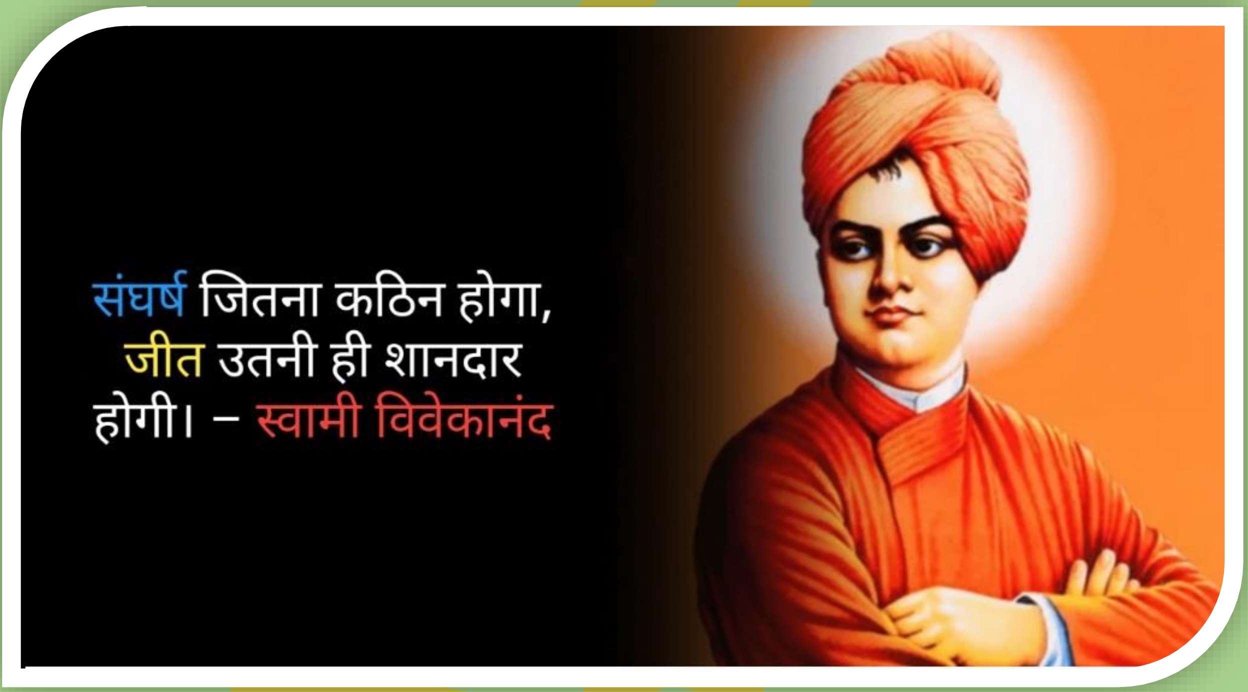

सिर्फ शादी की उम्र बढ़ाने से नहीं होगा समाधान

प्रिया भारती

एम.टी.एस.

कैबिनेट ने महिलाओं के विवाह की उम्र 18 से बढ़ाकर 21 साल करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। इसके पीछे महिला सशक्तिकरण,शिक्षा के अवसरों में बढ़ावा, महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार तथा मातृ मृत्यु दर कम करने के तर्क दिए जा रहे हैं परंतु इस प्रस्ताव को लेकर कई अन्य चिंताएं भी हैं।

कानूनी रूप से महिलाओं के विवाह की उम्र 18 से बढ़ाकर 21 कर देने का प्रस्ताव है परंतु आंकड़ों की मानें तो भारत में अभी भी लगभग 26% लड़कियों का विवाह 18 वर्ष से भी कम की आयु में ही हो जाता है। भारत में 50% लड़कियों की शादी 21 वर्ष से पहले हो जाती है जिसमें सर्वाधिक संख्या 20 से 21 वर्ष की उम्र के बीच शादी करने वाली लड़कियों की है। यदि लड़कियों के विवाह की उम्र 21 वर्ष निर्धारित की जाती है तो इन सारे विवाहों का अपराधीकरण हो जाएगा। इस तरह,यह कानून के बाल विवाह के आंकड़ों में इजाफा करेगा।

लड़कियों के विवाह की उम्र बढ़ाने के पीछे एक तर्क यह भी दिया जा रहा है कि इससे उच्च शिक्षा में उनकी भागीदारी बढ़ेगी यह एक अच्छा तर्क है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि 18 वर्ष की लड़की सामान्यतया स्नातक की पढ़ाई भी पूरी नहीं कर पाती परंतु यहां एक बड़ी सूक्ष्म बात पर हमें ध्यान देना चाहिए कि अब स्कूल छुड़ाकर लड़कियों की शादी कर देने के मामले नगण्य हो गए हैं। अब लड़कियां बाल विवाह का शिकार इसलिए हो जाती हैं क्योंकि स्कूल के बाद उच्च शिक्षा के साधन आसानी से उपलब्ध नहीं हैं। अतः माता-पिता लड़की को घर बिठाने की बजाय सामाजिक लोक-लाज का हवाला देकर विवाह कर देना ही उचित और एकमात्र उपाय मानते हैं। ऐसे में केवल विवाह की आयु बढ़ा देने से स्थिति में कोई बदलाव नज़र नहीं आएगा, जब तक कि लड़कियों को उच्च शिक्षा के साधन उपलब्ध नहीं करा दिए जाते।

एक कड़वा सत्य यह भी है कि जिस प्रकार कानून के होने के बावजूद महिलाएं घरेलू हिंसा के ख़िलाफ़ पुलिस या कोर्ट में नहीं जाना चाहतीं, उसी प्रकार, लड़कियां भी बाल विवाह के खिलाफ शिकायत करेंगी, इसमें संशय है। ऐसे में यह कानून केवल पुराने कानून की जगह लेगा परंतु वास्तव में समस्या जस की तस बनी रहेगी।

इस प्रस्ताव के पीछे जो सबसे जोरदार तर्क दिया जा रहा है वह है महिलाओं में प्रजनन दर और मातृत्व मृत्यु दर को कम करना। जया जेटली समिति ने भी मातृत्व की सही उम्र का ज़िक्र किया है। विवाह की उम्र बढ़ाकर 21 वर्ष कर देने से संभव है कि प्रजनन दर में शायद कुछ कमी नज़र आए परंतु मातृत्व दर का संबंध महिला की उम्र से ज्यादा उसके पोषण से जुड़ा हुआ है। इसका सीधा प्रमाण हम इस तरह से देख सकते हैं कि जिन राज्यों में गरीबी है और महिलाओं में पोषण का स्तर खराब है वहां मातृत्व मृत्यु दर भी अधिक है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार भारत में 66.4% महिलाएं एनीमिक (anaemic) हैं। कहना न होगा कि ऐसी महिलाएं जब बच्चों को जन्म देंगी तो उनके स्वास्थ्य का क्या हाल होगा? इसलिए विवाह की उम्र बढ़ाकर इस समस्या का समाधान तो नहीं निकाला जा सकता। इसके लिए सरकार को चाहिए कि महिलाओं में पोषण के स्तर को सुधारने का प्रयास करे।

इसके अलावा समानता के अधिकार का सहारा लेकर जो तर्क दिया जा रहा है कि लड़कों के विवाह की आयु 21 वर्ष है तो लड़कियों की क्यों नहीं? उनको यह भी ध्यान देना चाहिए कि संविधान 18 वर्ष से ऊपर के व्यक्ति को वयस्क मानता है। विवाह की आयु 21 वर्ष हो जाने से व्यक्ति पर माता पिता के नियंत्रण की अवधि बढ़ जाएगी। जबकि सुप्रीम कोर्ट 18 वर्ष से ऊपर के व्यक्ति को अपनी इच्छा अनुसार साथी चुनने और शारीरिक संबंध कायम करने की छूट भी देता है। व्यक्ति में यौन इच्छाओं का होना स्वाभाविक है परंतु भारतीय समाज विवाह से पहले के शारीरिक संबंधों को हेय दृष्टि से देखता है। अविवाहित लड़कियों की गर्भ निरोधक उपायों तक पहुंच का ना होना इसी से जुड़ी समस्या है। हालांकि यह 100% नहीं है परंतु समस्या तो है ही। कानूनी रूप से लिव-इन में रहने की उम्र अभी भी 18 वर्ष ही है। विवाह की उम्र 21 वर्ष कर देने से लिव-इन के मामलों में इजाफा होगा। इस प्रकार, यह ऑनर किलिंग को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण कारक साबित हो सकता है।

अंततः हम यह पाते हैं कि वयस्क और विवाह की उम्र अलग-अलग होने से कानूनी और सामाजिक रुप से कई समस्याएं खड़ी होंगी। हिंदू विवाह अधिनियम 1955 तथा विशेष विवाह अधिनियम 1954 के साथ भी इस कानून का टकराव होगा जहां अभी भी लड़कियों के विवाह की उम्र 18 वर्ष है। इसके अलावा मुस्लिम पर्सनल लॉ में तो लड़कियों के लिए विवाह की उम्र मात्र 15 वर्ष मानी गई है। इन सब टकरावों से निपटने के लिए एक लंबे समय का इंतजार करना होगा। और उसके बाद भी कानून को धरातल पर लागू करा लेना, भविष्य में देखने वाली बात होगी।

जया जेटली समिति ने भी अपनी रिपोर्ट में इस बात का जिक्र किया है कि शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार किए बिना इस कानून का लागू हो पाना मुश्किल है। ऐसे में केवल विवाह की उम्र की संख्या बदल देने से वास्तविक स्थिति कितनी बदल जाएगी? सरकार को उन सभी कमियों पर ध्यान देना चाहिए जो बाल विवाह को बढ़ावा देते हैं और जिनकी वजह से लड़कियां अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पातीं। गरीबी इन वजहों में सबसे बड़ी है। कहने की बात न होगी कि जिन परिवारों में आर्थिक स्थिति थोड़ी भी अच्छी है वहां बाल विवाह जैसी समस्याएं सर नहीं उठाती। सरकार को लड़कियों को मुफ़्त उच्च शिक्षा दिलाने और रोज़गार के अवसर पैदा करने के बारे में सोचना चाहिए ना कि विवाह की उम्र बढ़ाकर वाह-वाही लूटने की कोशिश करनी चाहिए।

‘पिता के नाम एक कुंवारे पुत्र का पत्र’

रंजन कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पूज्य पिता जी
(गृह प्रधान)

विषय: विवाह में हो रहे विलंब के संबंध में।

चरण स्पर्श,

त्योहारों के मौसम में आप सबों को ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ। एक के बाद एक पर्व के इस पावन बेला में, मैं यहाँ खुश हूँ, आशा है आप सभी सपरिवार और भी ज्यादा खुश होंगे। मैं और भी अधिक खुश होता यदि मेरे साथ भी सुख-दु:ख बाँटने हेतु कोई होती। उम्र के छत्तीसवें बसंत के बाद कोरोना-काल में जीवन जीना दूभर हो गया है। कोविड से पूर्व तो पार्क, मॉल, सिनेमा आदि से अविवाहितों का दिल बहल भी जाया करता था परंतु अब बहुत मुश्किल लग रहा है। अब तो सोशल मीडिया आदि से भी निराशा का भाव आने लगा है, मित्रों, रिश्तेदारों आदि के द्वारा तीज-त्योहारों एवं करवाचौथ आदि पर्वों पर उनके संगीनियों के साथ की तस्वीर के पोस्ट को देखकर तो ऐसा महसूस होता है अब मेरे जीने का मकसद ही क्या ? पहले लिंगानुपात के असंतुलन को विवाह में विलंब की एक बड़ी वजह मानी जाती थी परंतु जब से कोरोना ने कहर बरसाया है वजह अनगिनत हो गए हैं। बाबू जी को सनद रहे कि भारत सरकार के कई पाबंदियों के बावजूद भी शादियों जैसे पावन-पर्व पर पूर्णत: विराम नहीं लगा। हाँ, वैवाहिक रीति-रिवाज, ढोल-नगारे, डीजे आदि के नियम में थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ विवाह-योग जारी रहा। परंतु इससे विवाहोपरांत वैवाहिक जीवन पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा बल्कि और अर्थव्यवस्थता को सकारात्मक दिशा प्रदान हुई। यदि आप सब थोड़ी मेहनत मशक्कत कर मेरे लिए भी रिश्ता ढूंढ़ लिए होते तो शायद आपकी भी नैया, कोरोना काल में सस्ते-सुभीस्ते में निपट जाती। मेरा क्या ! मुझे तो रकम से ज्यादा अपने जीवन नैया की चिंता है। मित्रों एवं सहकर्मियों के लंच बॉक्स एवं चेहरे की खुशी देखकर ऐसा लगता है जैसे ‘मेरा जीवन कोरा कागज’। आपको कैसे बताऊँ, आस-पड़ोस वैवाहिक-जीवन जी रहे मेरे मित्रों एवं सहकर्मियों को देखकर मेरे कलेजे पर कैसे-कैसे साँप सिर्फ लोटते ही नहीं बल्कि नित नए-नए नृत्य करते हैं।

सरकारी नियमों में न्यूनतम उम्र सीमा 18 वर्ष एवं 21 वर्ष तो तय है परंतु अधिकतम सीमा परिवार के सदस्यों की विशेषकर के मुखिया की नैतिक जिम्मेदारी है। मुझे यह कहते हुए अति खेद हो रहा है कि चालीस के बाद विवाह का ही क्या ? बच्चों के साथ चलने तक में लज्जा महसूस होगी, आस-पड़ोस, समाज-बिरादरी सब पिता-पुत्र के रिश्ते को दादा-पोते का बताकर हँसी उड़ायेंगे।

मुझे अपने शुभचिंतक परिवार से अभी भी पूरी उम्मीद है। मौसा एवं फूफा जी से भी लगातार संपर्क कर उन्हें भी उनकी जिम्मेदारी बताइये। विवाह में रूठने के अलावे भी उनकी कुछ जिम्मेदारी बनती है। हमारे कुछ मित्रों

ने तो स्वत: संज्ञान लेकर इस पावन-पर्व से निपट लिए परंतु आपके दिए संस्कार एवं समाज-बिरादरी की नाक के खातिर, मुझे अविवाहित रहने में भी आत्मगौरव है।

आप सबों से मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप सब मिलकर मुझे इस आकंठ-डुबी अवसादी अवस्था से निजात अवश्य दिलाएंगे ताकि मैं जीवन के उत्तरार्द्ध में भी आपका उतना ही आभारी बना रहूँ जितना अब तक हूँ।

इस पत्र के जवाब में किसी शुभ समाचार का मुझे बेसब्री से इंतजार रहेगा। मेरी ओर से माताश्री एवं दादा-दादी जी को चरणस्पर्श और साथ ही साथ शादी-शुदा भैया-भाभी को प्रणाम कहिएगा।

प्रत्याशा सहित।

प्रतिलिपि:-

1. चाचा-चाची
2. भैया-भाभी
3. दीदी- जीजा
4. सभी रिश्तेदारों को अपने-अपने स्तर से प्रयास हेतु।

आपका अकेला एवं कुँवारा पुत्र
प्रकाशचंद वैरागी

वृक्ष

तनुश्री विश्वास
उपनिदेशक

मैं, आज भी अपना अस्तिव बनाएं रखा हूँ

जिदंगी के रेस में भागते मनुष्यों के बीच

जंगल में पतझड़ में पत्तों से बिछा रास्ता

मैं आज भी शहरों के रास्तों में बिछाता हूँ

जब हवा का झोंका नन्हीं नन्हीं पत्तों को बिखेरती हैं

और माटी को छूने से पहले एक नन्हीं सी बेटी के गालों को चुमती हैं

मैं गद्-गद् हो जाता हूँ

गालों को छू कर

माटी की महक को सजोंता हूँ

फिर बारिश के फुहारों से लिपटकर

माटी में मिल जाता हूँ

मैं आज भी अपना अस्तिव बनाए रखा हूँ

मैं आज भी अपना अस्तिव बनाए रखा हूँ।

उठो भारत के मनुज

निमिषा सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

उठो भारत के मनुज, उठो अपना यह वंश संभालों
फूफकार रहे तिमिर के अजगर, पौरूष से दंश संभालों
संस्कृति का रेशा-रेशा, आज धूमिल है, कलूषित है
राष्ट्र के हर कोने में, आततायियों का षड़यंत्र पुलकित है!
लोकतंत्र के इस मंदिर में, आज़ादी के कपटी नारे गूंज रहे
अपने-अपने नाहक स्वार्थ समेटे हम अब भी मूक खड़े !
हाँ हाँ ! यही सही है, यही सही है, ऐसे ही तो सुरक्षित रहोगे
किंतु यह सोच रहे आने वाली पीढ़ी से क्या कहोगे !
तुम्हें जगाऊँ, कुछ समझाऊँ, ऐसा तो मुझ में ज्ञान नहीं
मुझ मूर्ख को तो अब तक भूली, उन निरीह साधुओं की मुस्कान नहीं
"राशन नहीं, भाषण वही, सरकार ने आखिर दिया क्या है"
सावधान, स्वयं से न पूछ बैठो, राष्ट्रहित में किया क्या है!
मायानगरी के जादूग़रों की चर्चा भी तस्वीर भी हर घर में है
इन्हें पूजते हो तुम, पर ये क्या ! इन्हें तो तुम्हारे देश में डर है।
और कितना कहूँ, कैसे कहूँ, आहत हृदय के पास शब्द कहाँ
जिनसे युद्ध की आशा थी, कतारों में खड़े करबद्ध यहाँ।
बात बस इतनी है, उठो ना, कब तक ना जागोगे
अब तो सच भी पुकार के हारा, और कितना भागोगे।
उठो हे भारत के कृष्ण, उठो, अपना-अपना कंस संभालों
फूफकार रहे तिमिर के अजगर, पौरूष से दंश संभालों।

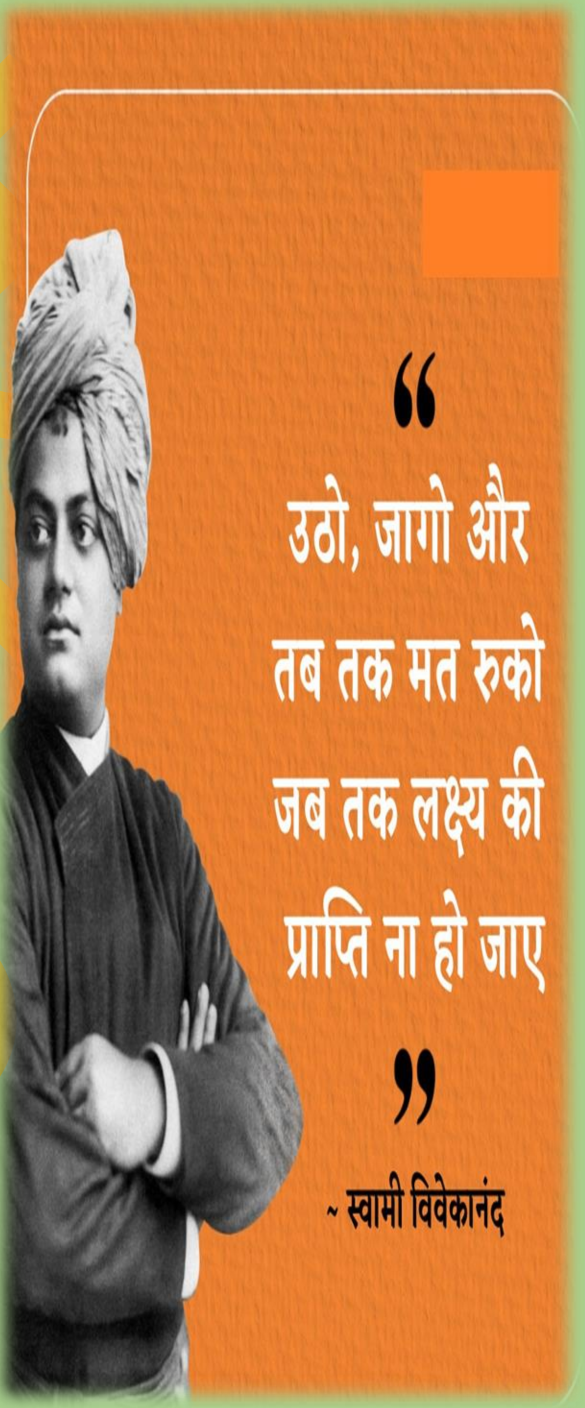

अभिलाषा

राजु हाजरा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जग न्यारी जन मीठी बोली
अपनी हिंदी भाषा है।
सब जाने हर कोई बोले
अपनी यह अभिलाषा है ॥

निज भाषा, निज मान है
अमिट छवि सम्मान है।
सहज, सरल और रसभरी
हिंदी भाषा अभिमान है ॥

पाली, प्राकृत इसका इतिहास।
जीवन ज्ञान से फैला प्रकाश।
वृक्ष विशाल भारत का हिंदी
सृजन करता यह प्राण है ॥

समृद्ध वर्णों से सुसज्जित
रत्न-जड़ित आभा इसकी।
समस्त भाषाओं में अग्रणी
अपनी राष्ट्रीय भाषा है ॥

कबीर, तुलसी, बिहारी जैसे
मोती-माला हिंदी में।
अंश बसा इसका है जैसे
बंगाली, गुजराती, सिंधी में ॥

दासता की भी भेंट चढ़ी,
भाषाओं का भी ऋण झेला।
चंदन तने पर भुंजग दंश।
हर भाषा इसकी गोदी खेला ॥

माँ की बोली है हिंदी
बाबा की आशा, हिंदी है।
बहन की राखी, भाई का प्यार
प्रेमी की भाषा, हिंदी है ॥

अब मान करो, सम्मान करो
अपनी भाषा पर अभिमान करो ।
जग श्रेष्ठ, समग्र है ज्ञान युक्त
राष्ट्रभाषा का गुणगान करो ।।

पी गरल, अमृत यह छलकाये
कवि प्रेम रस में यह मुस्काये ।
भर ओज, तेज और शक्ति रूप
कभी रौद्र रूप ये दर्शाये ।।

शब्दों के वाण से प्राण हरे
नारी शृंगार का रूप धरे।
कभी व्यंग्य, कभी है हास्य रस
हर भाषा की यह गोद भरे ।।

जन-जन की भाषा है हिंदी
भारत की आशा है हिंदी ।
देवी माथे पर शोभे तिलक
अर्पण की भाषा है हिंदी ।।

भावों का प्रकाश है हिंदी
कलम बनाती है तलवार
भविष्य होगा भारत का हिंदी
नव निर्माण का आधार ।।

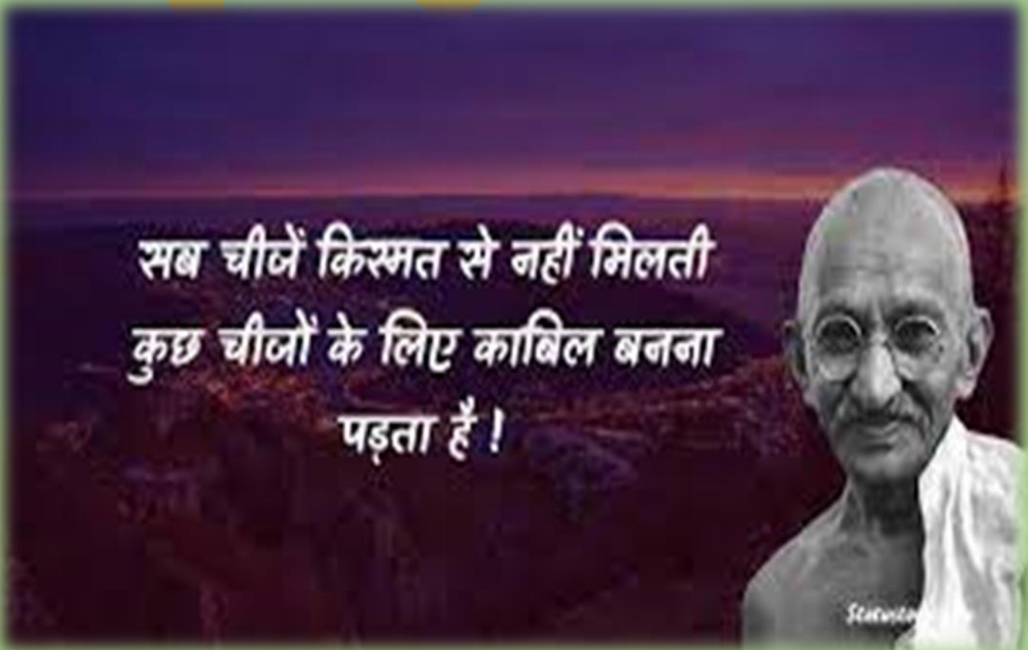

वो बिटिया तू फुलवारी सी

निमिषा सिंह

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

नन्हें बच्चों की किलकारी सी
वो बिटिया तू फुलवारी सी
एहसासों की खुशबू तू, विदाई वाले आसूं भी
निष्कपट अभिलाषाओं की क्यारी सी
वो बिटिया तू फुलवारी सी
माथे की पगड़ी, आंचल का ताना बाना तू
गौरव, प्रेम, शक्ति, आसक्ति, सब भावों का खजाना तू
विद्युत सी चपल कभी, गंभीर कभी फनकारी सी
वो बिटिया तू फुलवारी सी
तुलना तेरी कभी किसी से दिखी नहीं
हैं इतिहास साक्षी, समझ चुनौतियां टिकी नहीं
कठिनाईयां तेरी, जाती हैं तुझ पे वारी सी
वो बिटिया तू फुलवारी सी
कथा व्यथा की, फिर भी सजल मुस्कान लिए
तू खड़ी मिली, हर संकट में समाधान लिए
निर्जन, निर्दय, रंगहीन समय में, रंगों भरी पिचकारी सी
वो बिटिया तू फुलवारी सी।

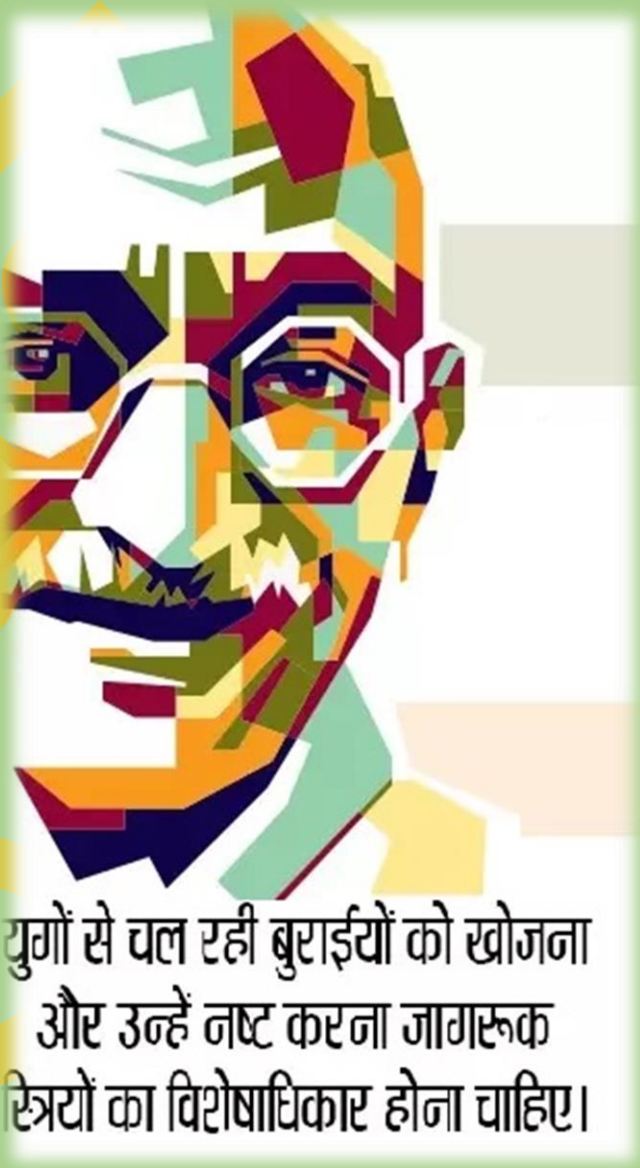

तराजू

अंतिमा जैन
लेखापरीक्षक

रख खुद को तराजू में,
तौल-तौल खुद को औरों से,
तुलना के इस भार में,
क्यों खुद को हर पल दबाना है ?
नाप अपना वक्त औरों से
जिंदगी जीने का ये कौन-सा पैमाना है ?

तुझे लगता डगर उनकी तो हसीन है
बस वक्त तेरा ही कठिन है
इस सोच में ही बहुत कुछ पाकर भी
तूने खुद को खाली हाथ पाया है।

उतर इस तुलना के तराजू से
छलांग लगा इस पैमाने से
रख यकीन खुद की डगर पर
ये वक्त तेरा तुझे खुद ही संवारना है।

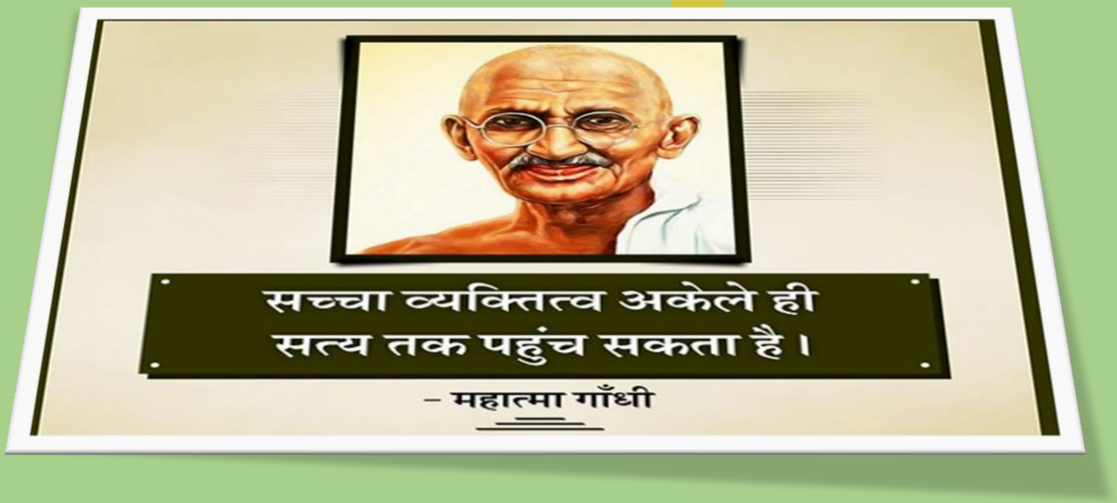

लक्ष्य

अंतिमा जैन

लेखापरीक्षक

ये हालात तुझे तोड़ेंगे
पर तू टूटना नहीं
कई साथी तेरा साथ छोड़ेंगे
पर तू कमजोर पड़ना नहीं
कई असफलताएं राह में मिलेंगी
पर तू हार मानना नहीं
हर पल वक्त तेरा बदलेगा
पर तू बदलना नहीं
बस अथक व निडर तू चलते रहना
कोई साथ दे या नहीं
तू तेरे लक्ष्य की और बस बढ़ते रहना।

कर्म

अंतिमा जैन
लेखापरीक्षक

भूख का कोई धर्म नहीं
दर्द की कोई जात नहीं
तुम इंसान हो
और इंसानियत ही तुम्हारी पहचान है
मदद के लिए जो
आगे ना बढ़ सके तुम्हारे कदम
क्या फिर भी तुझे खुद पर गुमान है?
प्रार्थना के लिए जो
जुड़ ना सके तेरे हाथ
क्या फिर भी तुझे इंसान होने पर
अभिमान है ?
है आज अगर सक्षम तू
तो दूसरों की जिंदगी भी रोशन कर दे
जितना भी बन पड़े तुझसे
इतना तेरा कर्म तू कर दे
इस कठिन वक्त में
बस तू एक इंसान दूसरे इंसान की मदद कर दे।

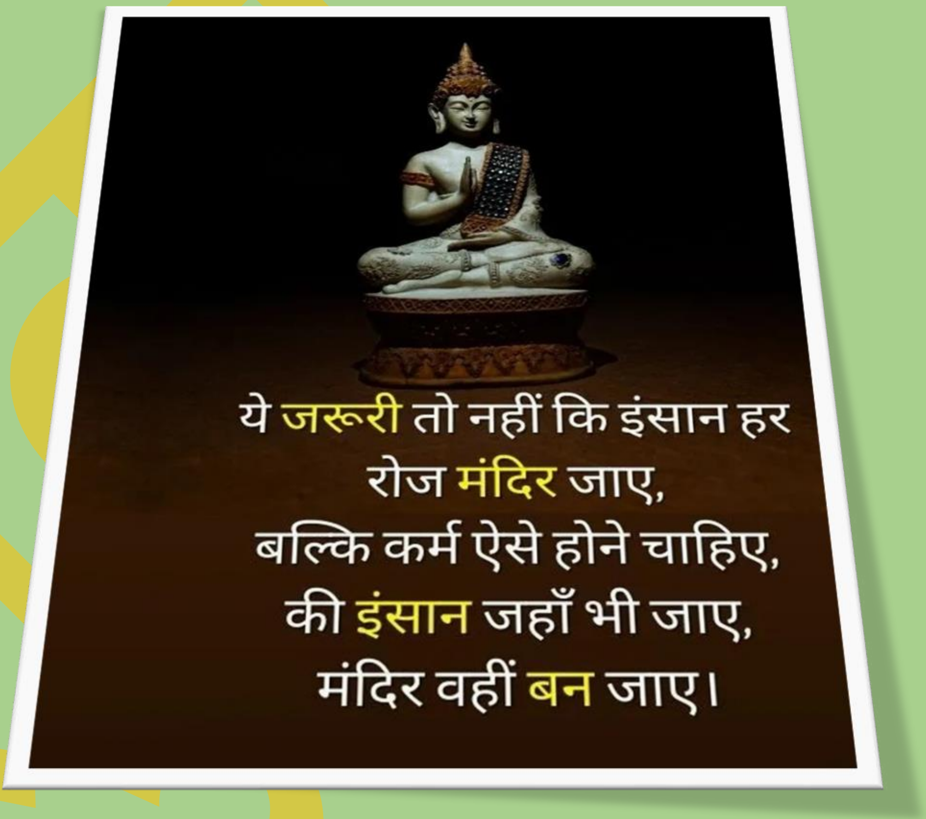

आशा की किरण

अंतिमा जैन

लेखापरीक्षक

एक पौधा है जीवन का

वृक्ष बन जाने तक सारे ऋतु देख लेगा

कभी वक्त की टहनी सूखी होगी

कभी किस्मत की पत्ती गिर जाएगी

पर याद रखना

पतझड़ भी आएगी

तो बसंत भी आएगी

धीरे-धीरे बदलते-बदलते

तेरे मेहनत के फूल भी खिल जाएंगे

बस तू आशा से तेरा पौधा सीचंते रहना

विश्वास की किरण में खिलने देना

एक सुंदर वृक्ष की छांव में

फिर तू सुकून ही सुकून पाएगा।

क्यों

अंतिमा जैन

लेखापरीक्षक

वो मुझसे आगे है
मैं उससे पीछे क्यूं
वो सोने के हार लिए
मैं फूलों का क्यों
उसे जीत मिल गई
मुझे राह ही नहीं मिली
वो सात समंदर पार है
मैं चारदीवारी में क्यों
वो एक ही प्रयास में सफल
मैं हर बार असफल क्यों
देख औरों की जिंदगी शायद हम
अपना
जीना भूल रहे हैं

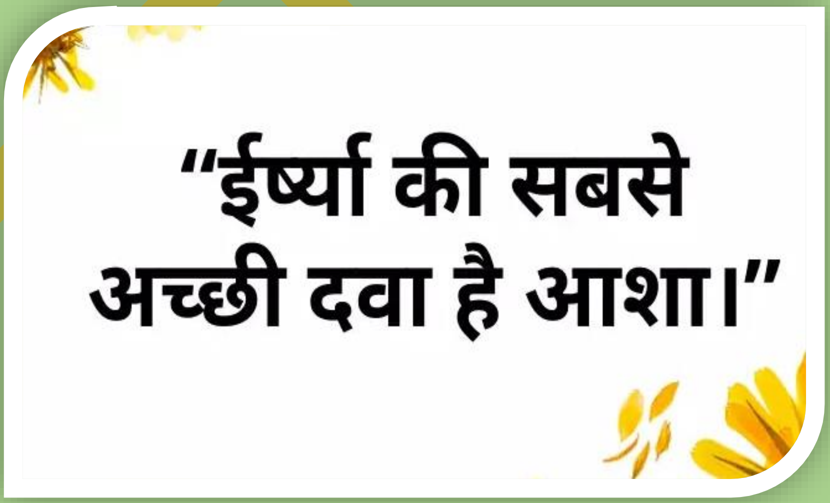

मेरे हालात ऐसे हैं

विजय कुमार
एम.टी.एस.

आधी रात की इस आखिरी पहर में,
हजारों रातों की अधूरी नींद,
पलकों के गिरने के इंतजार में,
बिस्तर पर करवटें बदलती बेचैन है।
निहारती कभी खिड़की से बाहर अंधेरे को,
कभी लक्ष्य के घेरे के अंदर अपने लुटेरे को,
फिर निहारकर मेरे जलते नैन,
उसके भी भीगे नैन है।

घंटों-घंटों कुर्सी-टेबल संग आध्यात्मिक यारी
उस पर पीठ-जांघ-टाँग की समकोणिक भागीदारी,
शरीर की सारी अस्थियों और उपस्थियों में,
हजारों टुकड़ों में टूटने सा दर्द दे रही है।
हर नाकामी के संग-संग आती,
बढ़ती उम्र और घटते अटेम्प्ट से,
कष्ट के किश्तों में कट रहीं जिंदगी,
तनिक भी ना कद्र दे रही हैं।

गोवा ट्रीप के लिए मोबाइल की बजती घंटियाँ,
कल रात आए मोटीवेशन को,
ज़मानत पर छोड़ने को मजबूर है।
साथ जन्में वालों के सत्रह लाख के मोहरे,
और उनके सरकास्टिक चेहरे,
सात जन्मों वालों के बेवफ़ा किस्से दो टूक,
और उनकी प्री-वेडिंग फोटोशूट,
ऐसे हालातों पर मेरे, तांडव करने को मगरुर है।

रास्तों पर माखौल उड़ाते चेहरे,
दिल की मंशा छुपाते मुस्कुराहटों के पहरे,
परवाह नहीं इनकी - कह दो इन्हें,
इन दिनों मैंने ज़ख्मों से कर रखी यारी है।
मोहब्बत की है मैंने जिस शिद्दत से,
अपने अस्तित्व के लिए संघर्षों से,
कोशिश की ना जानने की किसी ने,
किया उसने भी अगर, तो – आबाद,
वरना अपनी बर्बादी की भी कर रखी तैयारी है।

पर्वत-पहाड़, नदियों, झील-झरनों के मानचित्र,
और अख़बारों, पत्रिकाओं के कटे चित्र,
संसद में पारित होते नये-नये एक्ट
और सम्पूर्ण ब्रह्मांड के इम्पोर्टेंट फैक्ट,
मेरे इंतकाम के किस्से का हिस्सा बनने,
दीवारों की अब शान बनने लगी है।
मूवी, शॉपिंग, डेटिंग, व्हाटसएप्प और इंस्टाग्राम,
और शिकस्त के अफ़सानें बुनते इनके पैगाम,
मेरी आदतों की अब मेहमान बनने लगी है।

बिस्तर पर, फर्श पर और दूर कोने में,
जो मुड़े कागज़ जहां-जहां बिखरे हैं।
मेरी संघर्ष की दास्तां बयां करते ये,
इन्हीं से मेरे आगाज़ के मायने निखरें हैं।
चाँदनियों संग मेरे जलने का पैग़ाम लिए,
नेस्कैफे की महक अब सारी रात,
बंद खिड़कियों और दरवाजों के दरारों से,
छुप-छुपाकर निकल, सारी बेड़ियों से हो ओझल,
उन ऊंचाइयों की अय्यारी में बिखरेगी।
दस घंटे किताबों संग यारी के बाद भी,
ग्यारहवाँ घंटा उनसे फ़िर से,
बारहवें घंटे में मिलन की तैयारी में गुजरेगी।

एक ऐसी जगह

संजय कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)

इस भीड़ से दूर, इस भेड़-दौड़ से दूर,
तोड़कर जमाने की हर रस्म, हर दस्तूर।
बेखौफ़ लहरें संग, चल एक ऐसी जगह,
जहां जीने की ना हो कोई दूसरी वजह।
जहाँ ग़ैर गलियाँ कृत्रिम रोशनी से नहीं,
पूनम रात की चाँद-सितारों से रोशन हो।
जहाँ रातों में जुनूनीयत की डींग नहीं,
इक बिस्तर पर सुकूनीयत की नींद हो ।
जहाँ पाँव फर्श पर, छत सर पर नहीं,
ऊपर अंबर, नीचे धरती आठों पहर हो ।
जहाँ सड़कों पर ट्रैफिक का शोर नहीं,
हवाओं के ज़ोर से तन-मन विभोर हो ।
जहाँ लम्हों में व्यस्त होने के बहाने नहीं ,
हर लम्हा साथ, कोई बैठा सिरहाने हो ।
जहाँ नैतिकता की दस्तक पुस्तक में नहीं,
उसकी गरिमा से हर सर नत-मस्तक हो ।
जहाँ शान-शौकत, शोहरत में मगरूर नहीं,
होकर इनसे बेपरवाह, मशहूर जरूर हो ।
जहाँ अफ़सोस के आंसूओं के तराने नहीं,
गुजरते लम्हों-लम्हों से बुने अफसाने हों ।
जहाँ वक्त ऑफिस से घर के राहों में नहीं,
द्वार पर राह तकती बेपनाह पनाहों में हो ।
जहाँ मन्नत वृद्धाश्रम के मृत प्रांगण में नहीं,
बुजुर्गों के सींचे गृहस्थी के आंगन में हो ।
जहाँ वर्तमान में भूतकाल का काश नहीं,
आखिरी सांस तक भविष्य का आस हो ।

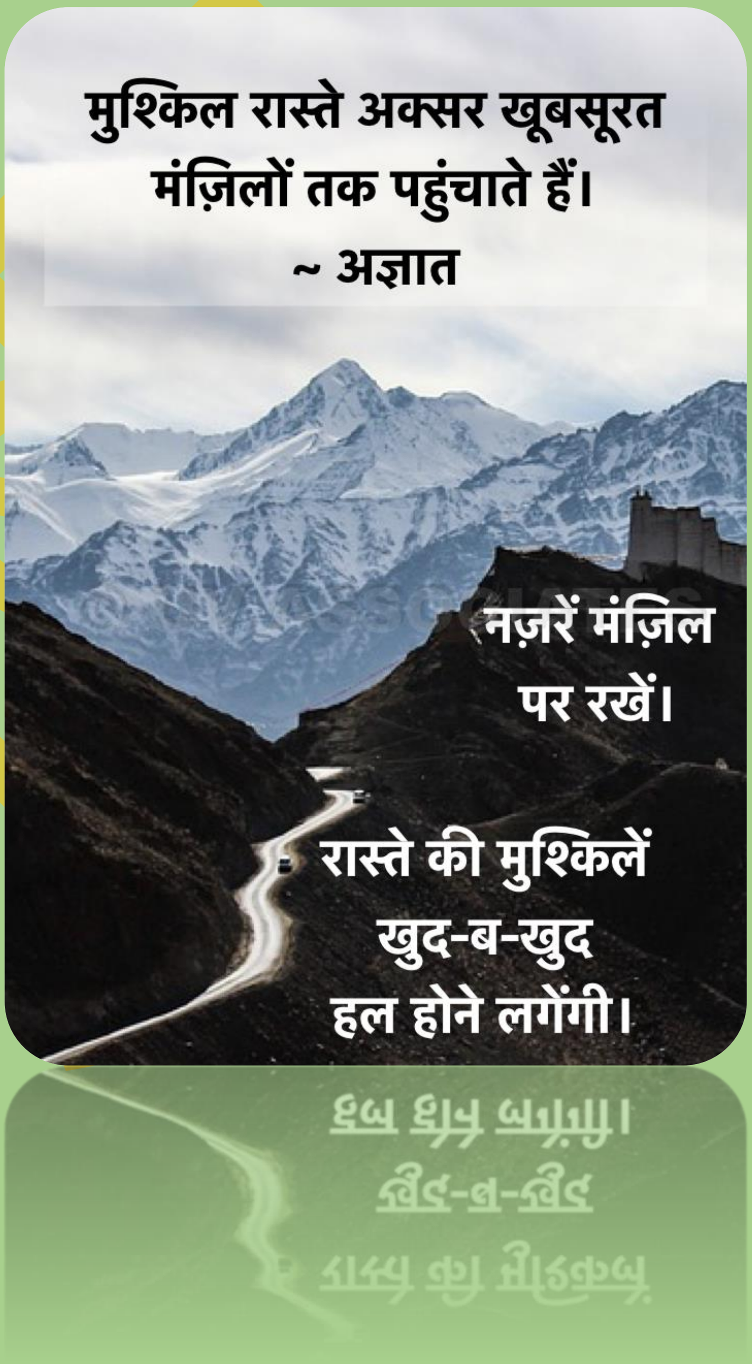

डर लगता है

विजय कुमार
एम.टी.एस.

किस-किस से भागूं, सात से या साठ से ?
सड़क पर अकेले होने से डर लगता है।
और भीड़ में मेरे इस्मत का हत्यारा है।
पहनूं अपने मन की या उनकी मंशा की ?
तन के कम ढ़के होने से डर लगता है।
पर नंगी चरित्र वाली उन आँखों में तो,
कपड़े के भीतर का भी सहमा नज़ारा है।
ये मोमबत्ती, ये दीये और ये मन की आग,
उन सिसकते अँधेरों में कहाँ गुम जाते हैं ?
रातों को अब बाहर होने से डर लगता है
और लूट जाने पर, सारा कसूर तुम्हारा है।
बेबसी ही कुछ ऐसी है, अपनी नारीत्व की,
मर्द ही दर्द, और हर दूसरा हमदर्द लगता है।
सात की हूँ या साठ की, पर डर लगता है।

हिंदी पखवाड़ा 2021 की कुछ झलकियाँ

हिंदी पखवाड़ा 2021 में दीप प्रज्ज्वलित करते कार्यालय प्रमुख श्री दीपक नारायण, महानिदेशक महोदय

हिंदी पखवाड़ा 2021 में दीप प्रज्ज्वलित करते श्री आर. श्याम, उप निदेशक महोदय

हिंदी पखवाड़ा 2021 में दीप प्रज्ज्वलित करती सुश्री मौसुमी धर, उप निदेशक महोदया

हिंदी पखवाड़ा 2021 में दीप प्रज्ज्वलित करती सुश्री डी. रमालक्ष्मी, उप निदेशक महोदया

हिंदी पखवाड़ा 2021 कार्यक्रम के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते श्री दीपक नारायण, महानिदेशक

हिंदी पखवाड़ा 2021 का संबोधन करते श्री दीपक नारायण, महानिदेशक

हिन्दी पखवाड़ा 2021 में अंताक्षरी प्रतियोगिता में भाग लेते सदस्यगण

हिंदी पखवाड़ा 2021 में उपस्थित अधिकारीगण

हिंदी पखवाड़ा 2021 के दौरान अंताक्षरी प्रतियोगिता का संचालन करती हुई सुश्री पोम्पी चौधुरी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा 2021 कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लेते सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण